एक और अभिमन्यु

[देश की सम-सामयिक समस्याओं पर आधारित
आधुनिक भाव-बोध का एक सशक्त नाटक]

डॉ. रामगोपाल गोयल

अभिनव प्रकाशन, अजमेर

मूल्य : पैंतीस रुपये

संस्करण : 1990

प्रकाशक :

अभिनव प्रकाशन
कचहरी रोड, पो. बॉ. न. 118
अजमेर

मुद्रक : इण्डिया प्रिन्टर्स, कचहरी रोड, अजमेर

EK AUR ABHIMANYU (PLAY) By-Ram Gopal Goyal Rs 35/-

पात्र

पुरुष पात्र

अमित
शहज़ाद
हरवंश
प. रामनाथ
सेठ धर्मदास
मनीश
पुलिस इन्सपैक्टर
जज
सरकारी वकील
पहला युवक
दूसरा युवक

स्त्री पात्र

सुभद्रा
वीणा
सविता

अपनी बात

प्रत्येक रचनाकार को ,अपने अनुभव की सीमा मे कुछ समस्याएँ बेचैन किया करती हैं, किन्तु रचनाकार की ये समस्याएँ अथवा उसकी पीड़ा केवल उसकी व्यक्तिगत न होकर देश और समाज की भी होती है। अतः अपने देश और समाज में व्याप्त जो समस्याएँ हैं, दारुण परिस्थितियाँ हैं, उन्हें मुखरित करने के लिए प्रत्येक रचनाकार किसी न किसी विधा को माध्यम बनाता है। इसके लिए जब वह पात्र और मच ढूंढता है, तब उसे नाटक रचना की ओर प्रवृत्त होना पडता है। इस देश और समाज में व्याप्त कुछ ऐसी समस्याएँ और परिस्थितियाँ है जो मेरे मन को एक लम्बी अवधि से मथती रही है। उन समस्याओ मे कुछ समस्याएँ हमारे देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण और उत्पीड़न की है जिनसे हमारी युवा पीढी मे घोर निराशा की भावना घर कर गयी है। वह इन समस्याओं का निराकरण करने एव प्रतिकूल तामसी प्रवृत्तियो के विरुद्ध सघर्ष करने की अपेक्षा दिग्भ्रान्त होकर या तो विदेश से आयातित हिप्पियो की नकल करके पलायन की मनोवृत्ति को अपना रही है या निराश हो विध्वंसात्मक प्रवृत्तियो मे संलग्न है। युवा पीढी की यह दिशा-शून्यता हमारे देश के वर्तमान और भविष्य के लिए एक गम्भीर चुनौती है; क्योंकि जब कभी भी समाज में मूल्य-भ्रष्टता, अन्याय और असत्यजनिक तामसी प्रवृत्तियो का तिमिर छाया होता है, तब युवा पीढी ही सूर्य बनकर अपने प्रखर तेज से तिमराच्छादित वातावरण को छिन्न-भिन्न करने में समर्थ सिद्ध हुई है। महाभारत काल का वीर अभिमन्यु उस संघर्षशील 'युवाआक्रोश' का प्रतीक है जिसने अन्याय और असत्य के प्रहरियो के चक्रव्यूह को तोड़कर अपना आत्म-बलिदान कर दिया था। प्रस्तुत नाटक मे मैंने इस पौराणिक पात्र

'अभिमन्यु' के नाम का प्रयोग एक प्रतीक के रूप मे अन्याय के प्रतिकार की भावना से युक्त युवा-आक्रोश के लिए किया है। जब-जब भी समाज मे मूल्य-भ्रष्टता, अन्याय, शोषण और उत्पीडन का चक्रव्यूह रचा जाता रहा है, तब-तब अभिमन्युओ ने जन्म लेकर इन भ्रष्ट प्रवृत्तियो के विरुद्ध संघर्ष किया है और सत्य तथा न्याय का पथ प्रशस्त किया है। आधुनिक युग का अभिमन्यु अमित एक ऐसा ही युवक है जो एक ओर सामाजिक रूढ़ियों, अन्धविश्वास, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण और उत्पीड़न की प्रवृत्तियो के विरुद्ध निरन्तर सघर्ष करता है, दूसरी ओर देश और समाज का रूप सवारने के लिए रचनात्मक कार्य करता है। इस तरह वह आज के दिशाहीन युवा-आक्रोश को एक सही दिशा प्रदान करता है।

प्रस्तुत नाटक मे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, और यहाँ तक कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज को स्पर्श करने वाली समस्याओ का दिग्दर्शन है जो मानव-समाज का एक भोगा हुआ यथार्थ है और चूंकि मैं मानव-समाज का एक लघु अंश हूँ, इसलिए ये समस्याएं मेरा भी 'एक भोगा हुआ यथार्थ' है। वस्तुत: आज आम आदमी अपने युग की यातना के सलीब को कन्धो पर ढोकर तीर्थ-यात्रा पर निरन्तर रूप मे चलने के लिए अभिशप्त है जबकि दूसरी ओर सुविधा-भोगी बौद्धिक वर्ग-प्रोफेसर वकील, न्यायाधीश, नेता आदि-केवल एय्यास प्रेत बनकर आम आदमी की इस यातनापूर्ण यात्रा मे काँटे बिछाकर मग्न है। एक ओर कमर-तोड श्रम करने पर भी अपने प्राप्य से वचित श्रमिक वर्ग है तो दूसरी ओर दूसरो के श्रम को चुराकर अपने हित में उसका उपभोग करने वाला परोपजीवी वर्ग। मेरी मान्यता है कि जब तक हमारे समाज मे श्रम को समुचित प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी तथा उसके प्राप्य भाग का सम-वितरण नही होगा, तब तक वह वर्ग-विभेद समाप्त नही होगा। अत: प्रस्तुत नाटक मे इस समस्या को उठाने का प्रयत्न किया है।

एक अन्य समस्या जो मेरे मानस को मथती रही है, वह है परम्परा और आधुनिकता के बीच सम्बन्ध की। परम्परा सर्वथा रूढिवादी नही होती और न आधुनिकता सदैव प्रगतिशील। परम्परा मे भी प्रगतिशील तत्व

विद्यमान रहते है जो हमे अपने पथ पर बढने के लिए शक्ति देते है। वस्तुत: परम्परा एक ऐसा पुल है जिस पर चलकर हम आधुनिकता के राजमार्ग तक पहुँच सकते है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक 'एक और अभिमन्यु' भी मुझे परम्परा से ही प्राप्त हुआ है और इस नाटक का नायक अमित भी परम्परा के उन प्रगतिशील तत्वों की खोज कर उनके द्वारा ही अपने पथ के लिए प्रकाश पाता है और रूढ़िग्रस्त परम्परावादी व्यक्तियो को निरुत्तर करता है। उदाहरण के लिए, जहाँ एक ओर प. रामनाथ भारतीय संस्कृति की दुहाई देकर जन्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था की रक्षा की गुहार लगाता है, वहाँ उसका ही पौत्र उसी भारतीय संस्कृति के उदाहरण देकर जाति-पाँति, छुआ-छुत आदि भेदो को नकारता है। पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के इस सघर्ष में अन्तत. विजय नयी पीढ़ी की ही होती है। इस प्रकार प्रस्तुत नाटक मे जहाँ एक ओर पुरानी और नयी पीढी का संघर्ष उभर कर आया है, वहाँ दूसरी ओर भारतीय संस्कृति का प्रगतिशील पक्ष उजागर हुआ है। यह बात सत्य है कि हमारे देशभक्त वीरो एवं स्वतन्त्रता-सेनानियों ने 'रामराज्य' का स्वप्न संजोकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए बलिदान दिया, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक अन्याय, धार्मिक पाखण्ड और राजनीतिक छल के इस त्रिकोण ने उस सुखद स्वप्न को बड़ी निर्ममता से भग कर दिया। इस मोह-भग की सबसे अधिक शिकार हुई आज की हमारी युवा पीढी। अत. हमारी युवा पीढी के समक्ष आज जो ज्वलन्त प्रश्न है, वह यही कि देश और समाज मे प्रचलित सामाजिक सकीर्णता, प्रान्तवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, शोषण और उत्पीड़न की समस्याओं से बचने के लिए शुतुरमुर्गीय दृष्टि अपना कर निराशा और कुण्ठा के गहन अन्धकार मे गिरे अथवा जीवन मे आस्था और सम्भावनाओं मे विश्वास रख कर इन समस्याओ और परिस्थितियों की चुनौती को स्वीकार कर रचनात्मक कदम उठाये। प्रस्तुत नाटक मे मैंने युवा पीढी की सम्भावनाओं मे विश्वास रखकर समस्याओं से सघर्ष करने और रचनात्मक कदम उठाने की ओर प्रेरित किया है।

प्रस्तुत नाटक के शिल्प के विषय में मुझे केवल इतना ही कहना है कि नये प्रयोगों के इस युग मे मैंने कोई नया प्रयोग नाट्य-शिल्प में किया है; ऐसा मेरा दावा बिल्कुल नही है। हां, प्रस्तुत नाटक को मचीय बनाने का ध्यान मैंने अवश्य रखा है। मचीय-निर्देशन या रग-संकेत की विस्तृत और अनावश्यक जटिलताओ मे न उलझकर सामान्य सकेत ही दिये है जिससे नाट्य-निर्देशक स्थान, समय और परिस्थितियों के अनुसार अपनी कल्पना का समुचित उपयोग कर सके। दृश्य-परिवर्तन मे मैंने 'अन्धकार और प्रकाश' योजना का सहारा लिया है। मंच पर प्रौढ़-शिक्षा की कक्षाओ, सभाओ आदि के दृश्यों के लिए अदृश्य श्रोताओ की धारणा व्यक्त कर पात्रों के 'एकाभिनय' के द्वारा प्रस्तुत नाटक को पात्रो की अधिक भीड़ से बचाने की चेष्टा की है जिससे सीमित और सुगम साधनो के द्वारा ही इसका मचीय रूप निखर सके।

प्रस्तुत नाटक के अध्ययन से यदि हमारी युवा पीढ़ी में देश में व्याप्त दारुण समस्याओ और परिस्थितियों से सघर्ष लेकर रचनात्मक प्रवृत्तियो के द्वारा राष्ट्र और समाज का रूप संवारने की प्रेरणा जागृत हुई तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगा। इसी आशा के साथ—

—लेखक

इस नाटक का मंचन करने तथा इसको सम्पूर्ण या आंशिक रूप से उद्धृत करने के लिए निम्नलिखित पते पर लेखक से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।

डॉ० रामगोपाल गोयल
59, शास्त्री नगर,
अजमेर—305001

अंक १

[निम्न मध्य वित्तीय परिवार का घर। सब कामों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला इस घर का एक कमरा जिसमें लकड़ी की एक गोल मेज रखी हुई है। समीप ही गोदरेज की दो-तीन कुर्सियाँ एवं दो मोढ़े रखे हुए हैं। कमरे की दीवार से सटा हुआ एक पुराना पलंग है। कमरे की दीवारों पर यत्र-तत्र शंकर, पार्वती, गणेश आदि देवी-देवताओं के साथ मुमताज, रेहाना सुल्तान आदि अभिनेत्रियों के कलेण्डर टंगे हुए हैं। कीलों के सहारे कुछ पारिवारिक फोटो भी टंगे हैं जिनमें एक प्रौढ़ व्यक्ति के चित्र पर माला पड़ी हुई है। कमरे का एक दरवाजा पीछे के अहाते में जाता है और एक अन्य दरवाजा बगल वाले कमरे से जोड़ता है। कमरे के सामने बरामदा है जिसके दोनों ओर गमले रखे हुए हैं।

पर्दा उठने पर जहाँ प्रकाश केन्द्रित होता है, वहाँ एक प्रौढ़ महिला सुभद्रा सिलाई-मशीन की सुई में धागा पिरोने में व्यस्त दिखलाई पड़ती है। वह मशीन चलाती है किन्तु धागा फिर टूट जाता है। बार-बार धागा टूट जाने से वह झुंझला उठती है और उसके मुंह पर परेशानी की रेखाएँ उभर उठती हैं तथा पसीने की बूंदें चमकने लगती हैं।]

सुभद्रा :

(खीज कर सिलाई-मशीन के चपत मारती हुई) उफ् ! मरी को न जाने क्या हो गया है? बार-बार यही खटराग, पर इसका भी क्या कसूर? बहुत पुरानी हो गयी है न! कल-पुर्जों में जंग लग गया है। पुराना मॉडल होने से

ऐसे पुर्जे भी नही मिलते। बहुत ठीक कराया, ठीक होती ही नही। (कुछ रुककर) पर, इससे पिण्ड भी तो नही छूटता। नई मशीन खरीदने पर ही तो पिण्ड छूट सकता है इससे। पर नई मशीन के लिए पैसे (वाक्य अधूरा छोड़कर, आंचल से मुंह का पसीना पोछती हुई शून्य मे ताकने लगती है। इतने में ही दीवार घड़ी दो टंकारे करती है। टंकारो की ध्वनि सुनकर सुभद्रा कुछ चौंक पड़ती है और चिन्तातुर भाव से बाहर दरवाजे की ओर देखती है।) अरे, दो बज गये ! वह अभी तक नही आया ! सुबह-सुबह ही घर से निकला था। न मालूम कहाँ भटकता फिरता है ? खाना भी तो नही खाया अभी तक।

[लगभग २७ वर्षीय एक युवक का प्रवेश। मुँह की पेशानी पर बेहद थकान के चिन्ह। हाथ में एक फाइल जिसमें विभिन्न परीक्षाओं से सर्टीफिकेट और टेस्टीमोनियल्स को मेज पर रख मोढे पर बैठते हुए—]

अमित :

बेहद गर्मी है माँ ! इतनी तेज गर्मी तो ...... [रूमाल से गर्दन का पसीना पोंछने लगता है] अरी माँ ! भरी दोपहर मे तुम मशीन मे क्या खट-पट कर रही हो ? आराम नही किया अभी !

सुभद्रा

अरे मेरे आराम की छोड़ बेटा ! पहले यह बता, तू इतनी देर कहाँ रहा ? अभी तक खाना भी नही खाया। कब से तेरा इन्तजार कर रही हूँ।

अमित :

खाने की भली चिन्ता की माँ ! खाना तो खा ही लूंगा, पर.....।

[कुछ चिन्तित होकर मोढे पर बैठ जाता है और अनमने मन से सर्टीफिकेट देखने लगता है। सुभद्रा अमित की चिन्तित मुद्रा को गौर से देखकर कुछ स्मरण करती-सी—]

सुभद्रा :

अरे हाँ ! मैं तो भूल ही गई। आज तेरा इन्टरव्यू था न ! क्या हुआ बेटा ?

अमित :

होता क्या ? माँ, सब बेकार का दिखावा है, छल है। सब कुछ पहले से ही तयशुदा होता है। वही इसमें भी हुआ। मिनिस्टर साहब की सिफारिश वाले एक व्यक्ति का चयन हो गया। सब फ्राड है।

सुभद्रा :

पर अमित तुम तो प्रथम श्रेणी में पास हुए थे। पढाई-लिखाई का पुरस्कार भी प्राप्त किया है तुमने तो।

अमित :

प्रथम श्रेणी ही नहीं माँ, फर्स्ट पोजीशन भी है। स्वर्ण-पदक भी प्राप्त किया है, किन्तु रिकमण्डेशन के सामने सब बेकार है। या तो पैसा हो या सिफारिश। बस यही एक मापदण्ड रह गया है किसी की योग्यता मापने का। आजकल बिना पेपरवेट के सर्टीफिकेट का कोई वजन ही नहीं होता और बिना सिफारिश के नौकरी नहीं मिलती। सैकड़ो-हजारों इंजीनियर, डाक्टर आदि युवक-युवतियाँ डिग्रियाँ प्राप्त कर नौकरी की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं। देश में बढ रहे भ्रष्टाचार एवं भाई-भतीजावाद से निराश हो सैकड़ों प्रतिभाएँ आत्म-निर्वासित होकर विदेशों में बसती जा रही हैं। गांधी जी के रामराज्य का क्या यही स्वप्न था माँ ? क्या सैकड़ों देशभक्तों ने इसलिए भयंकर यातानाएँ सही, आत्म-बलिदान किया ? (दीवार पर लगी तस्वीर की ओर देखकर) क्या पिताजी इसीलिए शहीद हुए थे ?

[क्रोध, घृणा और निराशा के मिश्रित भाव से अपने सर्टीफिकेट को मोड़कर कमरे के कोने में फेंक देता है।]

सुभद्रा :

हिम्मत से काम लो बेटा। आदमी को इतना निराश नहीं होना चाहिए। आखिर सब ठीक ही होगा।

अमित :

सब ठीक होगा ? कब ठीक होगा, कैसे ठीक होगा ? चारों ओर नैतिक संकट व्याप्त है। रक्षक ही भक्षक बन गये हैं। न्यायाधीश ही न्याय का गला घोंटने लगे हैं, तब भी ? नहीं माँ ! मैं इस सामाजिक अन्याय का प्रतिकार

करूँगा। शोषण, भ्रष्टाचार के विरुद्ध मरते दम तक संघर्ष करूँगा। मुझे आशीर्वाद दो माँ, जिससे मैं देश में व्याप्त तामसी वृत्तियों का निवारण करने में सफल हो सकूँ।

(अमित अपनी दृष्टि उठाकर सुभद्रा के चेहरे को देखता है, तब उसे पता चलता है कि वह दीवार में लगी तस्वीर को एकटक देख रही है और उसकी आँखों के कोर नम हो चले हैं। अमित कुछ विचलित होकर) अरी माँ, यह क्या ? तुम्हारी आँखो में आँसू ?

(आँचल से आँखो को पोंछती हुई) नहीं रे, यह तो बस यों ही !

अमित :

फिर भी माँ !

सुभद्रा :

तेरे पिताजी की कोई बात याद आ गयी थी।

अमित :

क्या बात थी माँ ? मुझे भी तो बताओ।

सुभद्रा :

बस रहने दे बेटा ! यों ही कोई बात थी। तू क्या करेगा जान कर ?

अमित :

(निहोरे करता-सा) नहीं माँ, बता दो न !

सुभद्रा :

तो ले सुन। बिना सुने अब तू मानेगा भी नहीं। उस रात की बात जब तेरे पिताजी दूसरे दिन देश की रक्षा-हित युद्ध के मोर्चे पर जाने वाले थे। उस समय तू मेरे गर्भ में था। मालूम है उस रात उन्होंने क्या कहा था ?

अमित :

क्या कहा था माँ ?

सुभद्रा :

उन्होंने कहा था—सुभद्रा तुम भी महाभारत वाली सुभद्रा हो। तुम्हारे गर्भ में भी एक और अभिमन्यु पल रहा है जो जन्म लेकर तुम्हारी कोख को

गौरवान्वित करेगा। बड़ा होकर बड़ी वीरता से देश के भीतरी और बाहरी शत्रुओं के चक्रव्यूह का भेदन करेगा।

अमित :

(उल्लसित होकर) ऐसा कहा था ?

सुभद्रा :

हाँ बेटा ! तब तुम्हारे पिताजी की बात सुनकर पहले तो मेरा मन पुलकित हो उठा, किन्तु तत्क्षण बाद ही मैं एक अज्ञात आशंका से सिहर उठी।

अमित :

(जिज्ञासा की मुद्रा में) किस आशंका से माँ !

सुभद्रा :

(बात को समाप्त-सी करती हुई) बस, अब रहने दे बेटा ! क्या करेगा जानकर ? ले उठ ! हाथ-मुँह धोले। खाना परोस देती हूँ।

अमित :

नहीं माँ ! मैं पूरी बात सुने बिना खाना नहीं खाऊँगा।

सुभद्रा :

(बड़े स्नेह से अमित के सिर पर हाथ फेरती हुई) तू तो बड़ा जिद्दी है रे। तो ले सुन ! वीर अभिमन्यु चक्रव्यूह को भेद कर उसमें प्रवेश करने की कला तो जानता था, किन्तु उसमें से सुरक्षित निकलने की कला उसे ज्ञात नहीं थी। तब जानते हो, उस वीर बालक के साथ कैसा भयंकर अन्याय हुआ ?

अमित :

हाँ माँ ! मालूम है, जब उस महावीर की अद्भुत वीरता के प्रखर तेज के आगे कौरव दल का सघन तिमिर छिन्न-भिन्न होने लगा, तब धर्म और न्याय के रक्षक होने का मुखौटा पहिनने वाले सात महारथियों ने षड्यन्त्र रचकर एक निहत्थे वीर का बड़ी निर्ममता से वध कर डाला था। यही हुआ था न माँ ?

[किंचित् देर के लिए स्तब्धता छा जाती है]

सुभद्रा :

(कुछ सजग हो स्तब्धता तोड़ती हुई) हाँ बेटे ! किन्तु तेरे पिताजी तो मन के पारखी थे न ? उन्होंने मेरी इस मानसिक स्थिति को तुरन्त भाँप लिया और

बोले—'किन्तु सुभद्रा ! तुम्हें तनिक भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हमारा अभिमन्यु तो असत्य पर आधारित अन्याय और शोषण के चक्रव्यूह को बड़ी वीरता से भेदकर उसमें से सकुशल निकलने में समर्थ होगा।'

[उक्त बात सुनकर अमित के मन से निराशा के भाव तिरोहित हो जाते हैं और मुख पर आशाजनक उल्लास का भाव तैरने लगता है।]

सुभद्रा :

(बात को बदलती हुई) लो, तब उठो बेटा ! बहुत देर हो गई। अब खाना खा लो।

[अमित सुभद्रा के साथ कमरे के पिछले दरवाजे से घर के भीतरी दालान में प्रवेश करता है। मंच पर कुछ क्षणों के लिए अन्धकार हो जाता है। नेपथ्य में गुनगुनाने की धीमी-धीमी ध्वनि सुनाई पड़ती है। धीरे-धीरे स्वर स्पष्ट सुनाई पड़ने लगता है—"दम मारो दम, मिट जाय गम ! बोलो सुबह शाम। हरे कृष्णा हरे राम।"

[मंच पर पुनः धीमे-धीमे प्रकाश एक किशोरी पर केन्द्रित होता है जो उक्त गाना गाने के साथ-साथ 'हरे कृष्ण हरे राम' फिल्म में काम करने वाली अभिनेत्री जीनतअमान की-सी चेष्टा एवं हाव-भावों की नकल करती हुई प्रतीत होती है। लड़की स्कर्ट पहिने हुए है तथा बॉब कट बाल चेहरे पर लापरवाही से इधर-उधर बिखरे हुए हैं। व्यक्तित्व में अल्हड़पन और मुख-मुद्रा से विद्रोह का भाव झलकता है। अपने हाथ में ली हुई पुस्तकों को बड़ी लापरवाही से मेज पर पटकती है। एक पुस्तक में से अभिनेता-अभिनेत्रियों के कुछ चित्र बाहर निकल कर बिखर पड़ते हैं। उन बिखरे चित्रों को समेट कर पुनः पुस्तक में रखती है और उनमें से एक चित्र लेकर लापरवाही से पलंग पर लेट जाती है।]

वीणा :

(चित्र को तन्मयता से देखकर उसे चूमती हुई) हाय ! हाउ स्वीट ?
[चित्र को तन्मयता से देखने लगती है। नेपथ्य में खट्-खट् की

आवाज। तदनन्तर एक स्त्री का स्वर—'कौन है कमरे में ? कौन विम्मी ?' लड़की आवाज सुनकर चौंक पड़ती है और बैठी होकर खिन्न मन से बड़बड़ाती है।]

वीणा :

इस घर में तो प्राइवेसी नाम की कोई चीज भी नहीं है। एक ही कमरे में सोओ, खाओ भी, सिलाई भी करो और सिलाई मशीन की खट्-खट् में पढ़ाई भी। बाबा मेरा तो दम घुटता है यहाँ।

[सुभद्रा का पुनः प्रवेश]

सुभद्रा :

(वीणा को कुछ तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर) क्या कहा रे तूने ?

वीणा :

(कुछ अचकचाती हुई) कुछ भी नहीं।

सुभद्रा :

कुछ भी नहीं।

वीणा :

(खीजकर) हाँ-हाँ कह तो दिया। कुछ भी नहीं !

सुभद्रा :

कुछ भी नहीं ! यह तू सच बोल रही है ?

वीणा :

(ऐंठकर) हाँ-हाँ सच बोल रही हूँ।

सुभद्रा :

फिर किसका दम घुट रहा है इस घर में ? मेरा या तेरा ! बोल बताती क्यों नहीं ?

वीणा :

(बनावटी हँसी हँसकर) ओह ! माँ तुम भी। मैं तो कह रही थी कि बड़ी तेज गर्मी है। ऐसी तेज गर्मी में क्या दम नहीं घुट रहा ?

सुभद्रा :

तू तो ऐसी तेज गर्मी में अब तक कहाँ रही ? तेरा पेपर तो कभी का हो गया था।

वीणा :

आज पेपर हुआ ही नहीं माँ ! कॉलेज में तो हड़ताल हो गयी थी।

सुभद्रा :

क्या कहा ? कॉलेज में हड़ताल ! फिर तू कहाँ थी अब तक ?

वीणा :

मैं...... मैं तो।

सुभद्रा :

कहती-कहती रुक क्यों गयी ? बोल, कहाँ थी ?

वीणा :

मैं चित्रा के साथ पिक्चर देखने चली गई थी। और भी लड़कियाँ थीं।

सुभद्रा :

तू पिक्चर देखने गई थी। लड़की तेरा दिमाग तो ठीक है ? किसे पूछकर गयी तू पिक्चर ?

[वीणा चुप रहती है। कोई प्रत्युत्तर नहीं देती और उपेक्षा भाव से मेज से पुस्तक उठाकर उसे खोलकर पढ़ने का बहाना करती है। अमित कमरे में प्रवेश कर एक ओर मोढ़े पर बैठ जाता है।]

सुभद्रा :

(वीणा से) बोल ! चुप क्यों है ?

वीणा।

(तुनककर) क्या बोलूँ ? कभी से दिमाग खाये जा रही हो।

अमित :

(तुनककर वीणा से) विन्नी ! तुझे जरा भी तमीज नहीं है बोलने की।

वीणा .

(और भी अधिक तुनककर तीखे स्वर में) हाँ, नहीं है हम में तो।
(किताब से अपना मुँह ढक लेती है।)

अमित :

ठहर जरा तू। (मोढ़े से उठकर वीणा से पुस्तक छीन लेता है। पुस्तक में से अभिनेता-अभिनेत्रियों के चित्र निकलकर कमरे के आँगन में बिखर पड़ते हैं। सुभद्रा और अमित उन चित्रों को अवाक् हो देखते हैं, फिर एक दूसरे के मुख को देखकर वीणा को देखते रह जाते हैं। वीणा तुनक कर रोने लगती है।)

अमित :

तो तू यह पढ़ती है कॉलेज में ! शर्म नहीं आती तुझे।

सुभद्रा :

बस अब नहीं सहा जाता अमित ! इस लड़की के दिन ब दिन लक्षण बिगड़ते जा रहे है। बस यह पढ़ चुकी अब कॉलेज में। मैं तो दिन-रात एक करके किसी तरह कपड़े सीकर पेट पालती हूँ और यह लड़की फ़िल्म देखती फिरती है।

अमित :

इसमें बिचारी का भी क्या दोष है माँ। आज की शिक्षा-प्रणाली ही बड़ी दूषित हो गयी है। उसमें नैतिक मूल्यों के लिए कोई स्थान ही नहीं रहा। आज की युवा पीढ़ी हिप्पयों की नकल करके पलायनवादी मनोवृत्ति की शिकार हो रही है। अपने घर-परिवार, समाज से आत्म-निर्वासित होकर किसी अतीन्द्रीय लोक के आनन्द की तलाश में चरस, गाँजा पीकर तथा एल.एस.डी., मरजुआना आदि मादक द्रव्यों का सेवन कर अपने मूल्यवान जीवन को नष्ट कर रही हैं बड़ी विकट समस्या है माँ ! 'सा विद्या या विमुक्तया'-शिक्षा का लक्ष्य भौतिक अभावों से मुक्ति, अज्ञान से मुक्ति पाना है, आज वही शिक्षा कर्म से च्युत होकर बन्धन का कारण बन रही है। (वीणा को पुचकार कर उसे मनाते हुए) अरी तू रो रही है ? इतनी बड़ी होकर। तू तो बड़ी अच्छी लड़की है। अच्छा बता आज तेरा पेपर कैसा हुआ ?

सुभद्रा :

आज इसने परीक्षा दी हो तहाँ ? कहती है कॉलेज में हड़ताल हो गई थी।

अमित

(आश्चर्य मिश्रित भाव से) कॉलिज में हड़ताल हो गई थी ? (वीणा की ओर उन्मुख होकर) क्यों री बिन्नी ! क्या यह सच है ?

वीणा :

(मुँह फुलाकर उसी तुनकमिजाजी के साथ) तो क्या मैं झूठ कह रही हूँ ?

अमित

(खिन्न होकर) तो हड़ताल का कुछ कारण भी होगा ।

वीणा

मुझे क्या मालूम ?

अमित :

तो भी ?

वीणा

कहते है परीक्षा में नकलबाजी रोकने के लिए प्रिंसिपल ने पुलिस को कॉलिज के अहाते में बुला लिया था और इन्वीजीलेटर्स भी दूसरे कॉलिजों से बुला लिये थे ।

अमित :

तो !

वीणा :

इससे कॉलेज के लड़कों ने अपना अपमान समझा । कुछ लड़कों ने क्षुब्ध होकर परीक्षा की कापियां फाड़ डालीं और कॉलिज-भवन पर पथराव करने लगे । इस पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया । सुना है कि पुलिस से मुठभेड़ में कुछ लड़के बहुत गम्भीर रूप से घायल हो गये और उन्हें अस्पताल ले जाया गया है । बस मुझे इतना ही मालूम है ।

अमित :

ओफ्फ् ! इतना बड़ा काण्ड हो गया । तब तो तमाम परीक्षाएँ स्थगित करनी पड़ेगी ?

वीणा :

यह तो पता नहीं।

सुभद्रा :

(ऊब कर उठती हुई) अच्छा भाई, मैं तो चलूँ। अभी ढेर सारे बर्तन माँजने है। अमित तू इस लड़की को समझा।

[सुभद्रा भीतर के अहाते में चली जाती हैं। दूसरी ओर से एक युवक का प्रवेश।]

शहजात :

अरे भाई अमित क्या हो रहा है ? (एक कुर्सी खींचकर उस पर बैठते हुए) तुम्हारा इण्टरव्यू कैसा रहा ?

अमित :

अरे छोड़ो यार इण्टरव्यू की। वह तो हो गया जैसा होना था। हां, यह तो बताओ शहजात ! आज कॉलेज में यह हड़ताल कैसे हो गई ?

शहजात :

अरे ये हड़तालें तो आजकल होती ही रहती हैं। सारे देश में ही जब हड़तालें-तालेबन्दी चल रही है तब कालिजों में क्यों नहीं ? तुम इस एक हड़ताल की बात कर रहे हो। पूरा सत्र ही हड़तालों में बीत गया। हड़ताल तो आज के समाजवाद का फैशन है यार। आम आदमी की जागृति का चिह्न है। (कथन के साथ व्यंग्य मिश्रित हंसी)

अमित :

पर शहजात भाई, परीक्षा के दिनों में यह हड़ताल ! इससे तो विद्यार्थियों का ही नुकसान होगा।

शहजात :

अमित तुम भी बड़े बमभोले हो यार ! अरे विद्यार्थियों के नफे-नुकसान की इस डर्टी पोलिटिक्स में कौन सोचता है। वे सब तो इस गन्दी सियासत की शतरंज के सिर्फ मोहरे हैं जिन्हें, कभी जातिवाद-वर्गवाद, कभी सम्प्रदायवाद, कभी विद्यार्थियों को विभिन्न दलों में विभक्त करके राजनीतिक दलवाद के द्वारा अपने मतलब के लिये यूज किया जाता है। चुनावों के समय

भी चाहे वे नगर-परिषद के हों, विधानसभा या लोकसभा के, सभी अवसरों पर हुड़दंग मचाने के लिए विद्यार्थियों को ही हथियार बनाया जाता है। अपने कॉलेज में ही लो न ! प्रोफेसरों के अलग-अलग गुट हैं और इन गुटों की गोटियाँ कॉलेज के विद्यार्थी ही तो हैं। जानते हो, इस हड़ताल के पीछे कौन थे ?

अमित :

(जिज्ञासा की मुद्रा में) नहीं तो ?

शहजात :

इस हड़ताल के पीछे भी प्रोफेसर-वर्ग की गुटबाजी थी। एक जाति विशेष का प्रोफेसर वर्ग अपनी जाति के विद्यार्थियों को परीक्षा में नकल कराना चाहता था, दूसरा गुट प्रिन्सिपल को नीचा दिखाना चाहता था। इसी माहौल में एक स्थानीय नेता को भी प्रिन्सिपल से अपना पुराना बदला लेने का मौका मिल गया। बस फिर क्या था। विस्फोटक सामान तैयार था ही, आग क्यों नहीं लगती ? परीक्षा में नकल करने दो, नहीं तो तोड़-फोड़, छुरेबाजी। यही तो आज का युवा-आक्रोश है ! एँग्री जनरेशन का यही तो नया तेवर है। (व्यंगपूर्ण हँसी हँसता है।)

अमित :

(कुछ तिलमिलाने की मुद्रा में) इसे तुम युवा-आक्रोश कहते हो शहजात ! यह तो इस पीढ़ी की विमूढ़ता का चिह्न है, अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा कार्य है। यदि दर्पण पर पत्थर फेंकोगे तो जानते हो क्या होगा ?

(प्रश्न मुद्रा में कुछ रुककर, फिर स्वयं ही उत्तर देता है) होगा यही न कि दर्पण या तो चकनाचूर हो जायेगा या उसमें चटक पड़ जायेगी। चटक पड़े दर्पण में वही बदसूरत चेहरा जब अपना प्रतिबिम्ब देखेगा तो एक के स्थान पर अनेक क्षत-विक्षत बदसूरत चेहरों में बँटा हुआ दृष्टिगोचर होगा। आज के इस तथाकथित युवा-आक्रोश की भी यही स्थिति है जो व्यवस्था के यथास्थितिवाद, सामाजिक अन्याय और राजनीतिक छल का दृढ़ता से प्रतिकार करने के बदले अपने को ही क्षत-विक्षत कर रहा है। और ! (कुछ सोचता-सा) और यह विदेशों से आयात किया हुआ तथाकथित एँग्रीजन-

रेशन का गुस्सा एक नपुंसक गुस्सा है जो कायरता का ही छद्म नाम है जिसमें कर्म का तेज नहीं, कर्म से विमुख हो भागने की, पलायन की मनोवृत्ति है। अपना मूल्यवान अध्ययनकाल यदि विद्यार्थी इस प्रकार नष्ट करने लगे ?....?

शहजात :

तुम तो भाई भाषण के मूड में आ गये। यार अब छोड़ो भी इस किस्से को। किस पचड़े को ले बैठे ! पढ़-लिखकर भी ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त करके भी क्या होगा। वही ढाक के तीन पात। डिग्रियाँ लिये-लिये रोड मास्टरी किया करो, जगह-जगह अपमानित होते फिरो। बोलो यही तो हस्र होगा न इस पढ़ाई-लिखाई का। अब तुम अपने को ही लो न ! फर्स्ट पोजीशन प्राप्त करके भी तुमने कौनसा तीर मार दिया ?

अमित :

(कुछ हतप्रभ-सा होकर) पर !

शहजात :

पर ! पर कुछ नहीं भैया। मौजूदा हालात में हमें तो कबीर बाबा का वह दोहा बड़ा फिट लगता है—'पढ़-पढ़ कर सब जग मुआ, पण्डित भया न कोई। ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होइ।' भाई वाह ! कबीर की भी कोइ मिसाल नहीं। बात बड़े पते की कह गया है। हमारी युवा पीढ़ी ने तो इसे अपने हलक में मानो गहराई से उतार लिया है। खुले आम खुलकर प्रेम करना। हो, फ्री लव ! दम मारो दम, मिट जाय गऽऽम। (व्यंग से हँसता है).

अमित :

इसे इतने हल्के स्तर पर न लो शहजात ! वस्तुत. यह एक सोशियो-साइकोलोजीकल प्रॉब्लम है। फिल्मी अभिनेता-अभिनेत्रियों की नकल करके फिल्मी डायलोग बोलने को तुम क्या प्रेम की संज्ञा दोगे ? वस्तुत: यह तो अत्यधिक सामाजिक वर्जनाओं से दबी हुई बीमारी काम-कुण्ठाओं का अनियंत्रित विस्फोट है।

शहजात :

यदि यही बात है तो इसका जुम्मेवार कौन ? जब छात्र-छात्राएँ देखती है कि उनके लैक्चरर्स ही प्रणय-लीलाओं में मशगूल है, खुलकर प्रेम करते हैं, तब वे अपने आदर्श-पुरुषों का अनुकरण ही तो करते है। मैडम भार्गव एवं

प्रोफेसर डेविड के प्रणय-प्रसंग को गान पर चढ़ाने के लिए तुमने ही मदद की। मैनेजमेण्ट के द्वारा कॉलेज से उनको निकाला दिये जाने पर तुमने ही तो उन्हें नौकरी पर वापस लेने के लिए कॉलेज में छात्रों से हड़ताल करवाई थी। अब क्या भूल गये उस बात को ?

अमित

उस घटना को इस रूप में मत लो शहजात। वह एक ऊँचे सिद्धान्त का प्रश्न था। कुछ दकियानूसी लोगों ने उसे जातिवाद और साम्प्रदायिकता का रूप दे दिया था और राजनीतिक पार्टियों ने उसे राजनीतिक स्टन्ट बना लिया था। उन लोगों की दृष्टि उस युगल के प्रणय-प्रसंग और उनकी सिविल मैरिज पर न थी, वरन् उनकी जाति और धर्म पर थी। चूँकि मैडम भार्गव जाति से ब्राह्मण थी और मि. डेविड हरिजन जाति से कनवर्टेड क्रिश्चियन थे, एक का धर्म हिन्दू था तो दूसरे का मजहब ईसाई। बस फिर क्या था ? पोंगा-पंथी पण्डितों, मजहबी फिरकापरस्त लोगों को अपना दम फुलाने का अवसर मिल गया। अब तू ही बता ऐसे अवसर पर रूढ़िवाद, परम्पराओं और साम्प्रदायिक ताकतों के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया जाता तब।····

शहजात :

तब ?

[एक सिक्ख युवक का प्रवेश। वह शहजात के मुँह से निकले 'तब' शब्द को पकड़कर पुनरावृत्ति करता है।]

हरवंश :

तब !

अमित :

अरे बैठो भी यार हरवंश ! तुम भी खूब मौके पर आये। (हरवंश एक मोढ़े पर बैठ जाता है—अमित अपनी बहन वीणा को आवाज देता है। वीणा आकर प्रश्न चिन्ह मुद्रा में खड़ी हो जाती है।)

अमित :

बिन्नी, जरा चाय तो लाओ हम लोगों के लिए।

[वीणा का प्रस्थान]

हरवंश :

हां भाई अमित, जरा इस 'तब' का खुलासा हो जाय।

अमित :

तुम 'तब' का खुलासा चाहते हो न हरवंश तो सुनो! तब तुम भी कब्र तोड़ने के उस झूठे और फरेबी काण्ड की गिरफ्त में आकर अभी तक कभी के दोजख में पहुंचा दिये जाते। मालूम है कॉलेज के उस नवनिर्मित साइन्स ब्लॉक की जमीन में, साम्प्रदायिक लोगों की गिद्ध दृष्टि ने, किसी तरह एक पुराना कब्रिस्तान खोज निकाला था और तुम पर कब्र तोड़ने का जुर्म लगा दिया था।

शहजात :

और तब सर्वो-मांगी शब्द कितने जोरों से उछलने लगे थे और सारे शहर में तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो गया था। हम लोग भी एक दूसरे को शक की नजर से देखने लगे थे। तब अमित ही ने तो अपने को जोखिम में डालकर उस मामले को ठण्डा किया था।

हरवंश :

जानता हूँ भाई, जानता हूँ। यह साम्प्रदायिकता का जहर न मालूम कितने निरीह और बेगुनाह इन्सानों की जान लेगा, कुछ पता नहीं। फिरका-परस्ती के इस डेविल ने महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों को भी नहीं छोड़ा। उन्हें भी अपने राक्षसी जबड़ों तले निगल गया।

शहजात :

वह अल्लाह, ईश्वर पुकारता ही रह गया।

अमित :

लेकिन वह मर कर फिर जी उठा।

हरवंश :

(आश्चर्य से) मर कर जी उठा ?

शहजात :

(आश्चर्य से) मर कर जी उठा ? कहाँ है वह ?

अमित :

हाँ, वह मर कर भी जी उठा और जब-जब भी जहाँ-जहाँ भी साम्प्रदायिकता, भाषावाद, प्रान्तवाद के नाम पर पशुता का नंगा नाच होने लगता है, वह निर्भय होकर वहाँ पहुँच जाता है। फिर उसका 'मर्डर' होता है, किन्तु वह फिर जी उठता है। यार हरवंश, यार शहजात ! वह बड़ा चमत्कारी व्यक्ति है। लगता है वह कभी नही मरेगा।

हरवंश और शहजात :

(दोनों एक साथ) कभी नहीं मरेगा ?

अमित :

हाँ, कभी नही मरेगा।

हरवंश

जहाँ इन्सानियत है, मानवता है, वह वहीं है। जब मानवता गिरने लगती है, उसका दम घुटने लगता है। जब वह मिटकर भी पुन: जी उठती है, तब वह भी जी उठता है। पर मानवता मिटती नही, वह गिर पड़ती है और गिरकर उठ बैठती है, फिर खड़ी होकर अपने पथ पर चल पड़ती है। पर इस पथ का कोई अन्त नही। चलते रहना ही जिसकी नियति है—चरैवेति-चरैवेति !

शहजात .

भाई अमित तुम तो ऊँचे दर्जे के दार्शनिक हो।

अमित :

मैं क्या, जिनमे दृष्टि है वे सब दार्शनिक हैं। इस दृष्टि से हम सभी तो दार्शनिक हैं।

[एक युवती का प्रवेश। युवती के हाथ में कुछ पुस्तकें हैं जिन्हें वह अपने वक्ष से सटाये हुए है। युवती इन तीनो को चर्चा में तल्लीन देख पहले तो ठिठक जाती है। फिर सब को नमस्ते कहकर घर के भीतर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ जाती है।]

अमित :

अरी सविता तुम ! आओ ! कब आई ? बैठो !

सविता :

(विस्मित हास्य के साथ) नहीं, आप गप्पें लगा लीजिए, तब तक मैं माताजी से मिल लेती हूँ।

[युवती का प्रस्थान। भीतर जाती हुई सविता को अमित के दोनों मित्र कनखियों से देखते हैं और कुटिल हास्य के साथ एक दूसरे को आँख मारते हैं। अमित उनकी इस हरकत से झेंप-सा जाता है।]

हरवंश :

(अमित से) बादशाहो की गल है ?

शहजात :

क्यों भाई अमित बात कहाँ तक बढ़ी ?

हरवंश :

स्टोरी क्लाईमैक्स तक पहुँची या नहीं ?

अमित :

अरे तुम दोनों यों बहकने क्यों लगे ?

शहजात।

हम बहकने हैं ?

हरवंश :

हम बहकते हैं ? लो भाई शहजात दूसरी बात सुनो।

शहजात :

अच्छा अमित ! अपनी वह कविता सुनाओ।

[अमित जिज्ञासा की मुद्रा में।]

हरवंश :

अरे वही पैर स्वयं ही बढ़ जायेंगे।

शहजात :

राह जरा मिल जाने दो।

हरवश :

होठ स्वय ही हिल जायेंगे—

शहजात :

बात जरा बढ जाने दो।

अमित :

क्या बकवास कर रहे हो शैतानो। किसी लड़की को देख कर तुम्हारे फेफड़े क्यों फूलने लगते हैं ?

हरवंश :

तुम्हारे फेफड़े सूखने लगते है।

शहजात ·

यार छोड़ो भी हरवंश। (मुस्करा कर अमित से) क्यो अमित अब मिठाई-विठाई हो जाय।

अमित .

मिठाई किस खुशी में ?

हरवंश :

अरे हमारे लिए भाभी जो लाओगे।

अमित :

भाभी ! कैसी भाभी ?

शहजात :

अब पहेली मत बुझाओ।

अमित :

भाई तुम तो बड़े अजीब अहमक हो। अरे यह सवित चटर्जी है। कभी-कभी अपनी डिफीकल्टी सोल्व करने आ जाती है।

हरवंश :

अच्छा तो तुम्हारे पास पढ़ने आती है।

शहजात :

क्या पढ़ाते हो भाई ?

हरवंश :

प्रेम-मन्त्र !

शहजात :

अरे नही यार, वाक्-तन्त्र !

अमित :

(कुछ उद्विग्न-सा होकर) अब तुम बकवास बन्द नही करोगे ?

शहजात :

लो, कर दी बकवास बन्द ।

अमित :

(कुछ शान्त होकर) जानते हो उसके साथ मेरा रिश्ता सिर्फ मित्रता का है।

हरवंश :

यानी कि वह तुम्हारी मित्र है ?

शहजात :

नही गर्ल-फ्रैण्ड है ।

[इस पर हरवंश व शहजात ठहाके के साथ हँस पड़ते हैं ।]

अमित :

(खीजकर) तुम लोग इस तरह मूर्खों की भांति क्यों हँस रहे हो ?

हरवंश :

(अपनी हँसी रोककर) यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूँ अमित !

अमित :

कहो तो ।

हरवंश :

हमारे समाज में औरत और मर्द का रिश्ता दोस्ती के रूप में मान्य नहीं है । औरत माँ, पत्नी, बहिन, पुत्री वगैरह-वगैरह हो सकती है, किन्तु मित्र नही ।

अमित :

यह तुम्हारी भ्रान्ति है। भारतीय संस्कृति के प्रति अनभिज्ञता का प्रमाण है ।

हरवंश :

वह कैसे ?

अमित :

तुम्हें मालूम होना चाहिए, प्राचीन काल में पुरुष-स्त्री के बीच मैत्री को भी पवित्र दृष्टि से देखा जाता था। द्रौपदी और कृष्ण में बड़ी घनिष्ट मित्रता थी, किन्तु दोनों की मित्रता पर किसी ने आपत्ति नहीं की थी।

शहजात :

(कुछ ऊबता-सा) लो अब तुम फिर कथावाचक बन बैठे। यार अब छोड़ो इस बात को। (हरवंश की ओर देखकर) क्यों भई हरवंश! बैठे ही रहोगे या चलोगे भी।

अमित :

(शहजात से) पहले तू यह बता, आजकल क्या कर रहा है तू ?

शहजात :

भाई, आई० ए० एस० 'एग्जाम्स' की तैयारी कर रहा हूँ। उम्मीद तो है निकल जाऊँगा। यू० पी० एस० सी० के सदस्य आजकल यूसुफ अली है। शिक्षा मन्त्री जी से कहलाऊँगा। हमारे वो एम० पी० साहब है न! उनके मार्फत ही कुछ तिकड़म भिड़ानी होगी। अच्छा भाई चलूँ। काफी देर हो गयी।

अमित :

अच्छा! गुड विशेज विद यू!

शहजात :

सेम टू यू।

[शहजात का प्रस्थान; अमित और हरवंश पूर्ववत् बैठे रहते हैं।]

अमित :

और हरवंश! तुम्हारे पेपर कैसे हो रहे है ?

हरवंश :

पेपर तो ठीक हो रहे थे यार, पर अब सब गुड़-गोबर हो गया। लड़कों ने परीक्षा के बीच में हड़ताल कर दी। अब तो यह साल गया ही समझो।

अमित :

वास्तव में यह तो अपने पैरों में अपने आप ही कुल्हाड़ी मार ली लडकों ने।

हरवश :

(उसांस लेकर) क्या बताऊँ अमित ? पिताजी इस वर्ष ही रिटायर हो रहे है, उधर बहिन की शादी करना भी बहुत जरूरी है। सोचा था इस वर्ष परीक्षा में पास होकर कुछ नौकरी-वोकरी की जुगाड़ बैठाऊँगा, पर अब तो ! (शून्य में ताकने लगता है। फिर खड़ा होकर) अच्छा अमित अब चलूँ, बहुत देर हो गयी।

[हरवश का प्रस्थान। अमित कुछ सोचने की मुद्रा में खड़ा रहता है। मंच अन्धकार में डूब जाता है।]

[कुछ क्षण पश्चात् मंच पर प्रकाश पुनः शनैः-शनैः उभरता है। पार्क का दृश्य दिखलाई पड़ता है। वृक्ष के नीचे रखी हुई एक बेंच पर बैठे अमित और सविता पर प्रकाश केन्द्रित होता है। अमित किसी विचार में खोया-सा लगता है। सविता उसे निर्निमेष दृष्टि से देख रही है।]

सविता :

क्या सोच रहे हो अमित ?

अमित :

(सजग-सा होकर) कुछ भी नही सविता। कुछ भी तो नही।

सविता :

फिर भी ?

अमित :

कह तो दिया न, कुछ भी नही।

सविता :

अमित, तुम इस प्रकार जब सोच में डूब जाते हो तो मुझे डर लगता है।

अमित :

(आश्चर्य मिश्रित भाव से) डर लगता है ! पर क्यों ?

सविता :

जाने क्यों ? यह तो मैं बता नही सकती। पर, लगता है।

अमित :

पर सविता कुछ व्यक्ति सोचने के लिए ही अभिशिप्त हैं। उन अभिशिप्त व्यक्तियों मे से मैं भी एक हूँ। जानती हो एडम और ईव को स्वर्ग के राज्य से क्यो वंचित होना पड़ा था ?

[सविता जिज्ञासा की दृष्टि से देखती है।]

क्योंकि उन्होने भूल से ज्ञान-वृक्ष का फल चख लिया था। क्या करूँ सविता ! सोचते-सोचते मस्तिष्क की नसें फटने लगती हैं। शिराओ में कितनी दारुण वेदना उबलने लगती है।

सविता :

पर सोच-सोच कर यो अपने को ही क्षत-विक्षत करने से लाभ क्या मिलेगा तुम्हे ?

अमित :

तब फिर जी चाहता है इस तथाकथित समाज को, उसके झूठे नियमो को, भ्रष्टाचार और अन्याय पर टिकी व्यवस्था को तत्काल नष्ट कर दूँ।

सविता :

लेकिन इतना गुस्सा किस लिए ?

अमित :

किस लिए ? तुम पूछ रही हो सविता किस लिए ? शायद तुम्हे पता नही है कॉलेज मे पुलिस के द्वारा छात्रो की निर्मम पिटाई के कारण एक निरपराध किशोर वय छात्र अस्पताल मे मर गया। वह लडका गाँव से पढ़ने आया करता था। अपनी विधवा माता का वह इकलौता पुत्र था और अपने अन्धे-बहरे वृद्ध दादा का एकमात्र सहारा था।

[सविता अमित को चुपचाप देखती रहती है।]

तुमने सुना होगा सविता ! उस एम० पी० सेठ के ट्रक ड्राइवर ने नशे में धुत्त हो किस तरह एक सड़क पर चलते राहगीर को कुचल दिया था, किन्तु न्याय व्यवस्था के कानो मे जूँ तक नही रेंगी थी।

सविता :

यह तुम जो बात कह रहे हो, वह तो ठीक है अमित, किन्तु !

अमित :

किन्तु सविता पहले मेरी बात तो सुनो !

सविता :

सुन रही हूँ ।

अमित :

क्या तुमने कल के न्यूज पेपर में नही पढ़ा था ?

सविता :

नही तो ! क्या लिखा था ?

अमित

लिखा था एक व्यक्ति ने पहले अपने बच्चों को, फिर अपनी पत्नी को कुएँ में धकेल दिया, और स्वयं कुएँ के कूद कर आत्महत्या कर ली ।

सविता :

(आह भरकर) बड़ी दर्दनाक घटना है । उस व्यक्ति ने ऐसा क्यों किया ?

अमित :

कारण जानना चाहती हो ?

[सविता चुप]

तो सुनो ! इस स्वतन्त्र भारत में उस गरीब को अपना व अपने बच्चों का पेट भरने के लिए कोई काम नही मिला, कही नौकरी नही मिली । अन्त में अपने बच्चों की भूख छटपटाहट उससे बर्दाश्त नही हो सकी और सपरिवार अपनी आत्म-हत्या कर ली । यह एक नही, ऐसी अनेक घटनाएँ इस देश मे नित्य घटित होती हैं सविता । हमारे देशभक्त वीरों ने, स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने रक्त की बूंदो से सींच कर इस धरती पर स्वतन्त्रता, समता और न्याय के कमल खिलाये थे, उसे आज हमारे नेताओ के क्षुद्र स्वार्थ और सत्ता-लिप्सा ने अपने पैरों तले रौंद डाला । यहाँ 'सत्य मेव जयते' के ठीक नीचे बैठ न्यायाधीश घूस लेकर न्याय को बेचता है । जानती हो समाज की पाखण्ड पूर्ण स्थिति एवं राजनीतिक छल पर एक फ्रांसीसी लेखक कामू ने कितना तीखा प्रहार किया है ?

सविता :

(जिज्ञासा की मुद्रा में) नही तो !

अमित :

कामू का कथन है—'यहाँ हर कैदखाने पर स्वतंत्रता का और हर मुनाफे की दूकानदारी पर समता का लेबिल लगा है।'

सविता :

आज की सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियो पर यह तो बड़ा तीखा प्रहार किया है कामू ने !

अमित :

सविता ! कहते हुए बड़ी पीड़ा होती है। 'राम-राज्य' के स्वप्न देखने वाला देश आज अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार, बेकारी, बीमारी के साथ-साथ मूल्य-भ्रष्टता, धार्मिक पाखण्ड, सकीर्ण साम्प्रदायिक भावना जातिवाद, प्रान्तवाद एवं भाषावाद की अनिष्टकारी प्रवृत्तियो के चक्रव्यूह से पूरी तरह घिरा हुआ है। [पूरे जोश के साथ अपने दोनों हाथो की मुट्ठियाँ तानकर] मैं अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ अपना सर्वस्व बलिदान करके भी इस चक्रव्यूह को भेदना चाहता हूँ जिससे स्वतन्त्रता, समता और न्याय के स्वर्ण-पुष्प खिल सकें।

सविता :

[विह्वल होकर] तुम्हारा यह लोक-कल्याणकारी शुभ सकल्प तो महनीय है अमित ! [अमित के एक हाथ को अपनी कोमल हथेली में लेकर] किन्तु एक बात कहने की इजाजत दोगे मुझे ?

अमित :

कहो न सविता ! चुप क्यों हो ?

सविता :

इतना बडा कार्य जो तुम करना चाहते हो, वह केवल सोचने से, केवल गुस्सा करने से पूरा हो सकेगा ?

[अमित जिज्ञासा की दृष्टि से सविता को चुपचाप देखता है]

जब तक व्यक्ति के सोच या विचार में कर्म की तेजस्विता प्रकट न हो, तब तक ऊसर भूमि में बोये गये बीज की भाँति ऐसा सोच या विचार निरर्थक होता है। विचार या सिद्धान्त की खाद में जब कर्म के बीज बोये जाते हैं तब लक्ष्य प्राप्ति का पुष्प खिल उठता है। बिना कर्म के शब्द केवल झांझ की झंकार से कर्ण-कटु लगते हैं और वे लफ्फाजी का रूप लेते हैं। बिना कर्म के आक्रोश या गुस्सा व्यक्ति को क्लीव बना देता है। वह आदमी में विवशताजन्य दैन्य भाव उत्पन्न करता है, इसलिए मेरा कहना इतना ही है अमित कि इस चक्रव्यूह को तुम अभिमन्यु जैसे कर्मवीर बनकर भेद सकते हो।

अमित :

[उल्लसित होकर] अरी, सविता आज तो तुमने अपने नाम को सार्थक कर दिया। आज तो तुमने मैत्रयी, गार्गी, वैदिक काल की सब विदुषियों को पीछे छोड़ दिया।

[अमित भावातिरेक से सविता के कोमल हाथ को आहिस्ता से अपने हाथ में लेकर धीरे से चूम लेता है।]

सविता :

[अमित से अपना हाथ छुड़ाकर सलज्ज भाव से] अरे ! सार्वजनिक पार्क में यह क्या कर रहे हो ? कोई देख लेगा न !

अमित :

लेकिन हम कौन-सा अपराध कर रहे हैं जो तुम इतनी डर रही हो।

सविता :

डरने की बात ही है, नियम का उल्लंघन जो कर रहे हो।

अमित :

(उत्तेजित होकर) सविता ! देखो तुम नियमों की बात चलाकर फिर मुझे गुस्सा दिला रही हो। तो क्या तुम समाज के इन जड़-बन्धनों को नियम कहती हो।

सविता :

समाज इन नियमों के सहारे ही तो टिका हुआ है अमित ! नहीं तो कभी का धराशायी हो गया होता।

अमित :

जिस नियम से मानव जाति का एक अंग जन्म से पवित्र मान लिया जाता है, किन्तु दूसरा अंग अस्पर्श्य घोषित कर दिया जाता है, अपनी जातिगत पवित्रता के दम्भ में हरिजनों को स्वच्छ पानी पीने तक का अधिकार नहीं देता और उनके घर जला दिये जाते हैं। जिस नियम से समाज में पहले भिखमंगों की जमात पैदा की जाती है फिर भीख देकर दया दिखलाने का दम्भ प्रकट किया जाता है। समाज के ऐसे नियमों को मानने के लिए तुम बाध्य हो ? बोलो सविता। जवाब दो। चुप क्यों हो ?

सविता .

पर यह बात दूसरी है अमित।

अमित :

दूसरी कैसे है सविता। जिस नियम से व्यक्ति अपना प्यार पूरी सच्चाई और निष्ठा से प्रकट नहीं कर सके। जिस समाज में पग-पग पर वर्जनाएँ, कदम-कदम पर कुण्ठाएँ हों, उस समाज का मानसिक स्वास्थ्य·······!

[सविता अमित के मुंह पर हाथ रखकर उसे बोलने से रोकते हुए।]

सविता :

बस इतना ही बोलो अमित। तुम्हारा इस तरह उत्तेजित होना ठीक नहीं।

[फिर बात को बदलती हुई।]

एक बात कहूँ अमित।

[अमित जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से सविता की मुख-मुद्रा देखता है।]

जब तुम इस तरह उत्तेजित होते हो, अपना गुस्सा प्रकट करते हो तब !

अमित :

तब !

सविता :

मुझे भय लगता है।

अमित :

यह तो तुम पहले भी कह चुकी हो।

सविता :

किन्तु साथ ही तुम्हारे प्रति प्यार भी उमड़ पड़ता है ?

अमित :

भय भी लगता है, प्यार भी उमड़ पड़ता है। यह तुम कैसी पहेली बुझा रही हो।

सविता :

यह पहेली नही है अमित ! मानव-मन का द्वन्द्वात्मक सत्य है।

अमित :

मैं समझा नहीं।

सविता :

ठीक से मैं समझा भी नही सकती, केवल महसूस करती हूँ। मै ठहरी साधारण लड़की। नारी हू न। नारी के लिए नियम मानना ही ठीक रहता है, जीवन में आस्था, सम्भावनाओ में विश्वास।

अमित :

समाज के नियमो को मानने के लिए नारी बाध्य है, पुरुष नही। क्या यही कहना चाहती हो तुम ?

सविता :

मेरी पूरी बात तो सुनो अमित।

अमित :

सुन रहा हूँ।

[अमित सविता के चेहरे को चुपचाप देखता रहता है।]

और तुम्हारे गुस्से से प्रेम इसलिए करती हूँ कि इससे तुम साधारण व्यक्ति न रहकर एक असाधारण व्यक्तित्व वाले हो जाते हो सामान्य से ऊँचे उठकर विशिष्ट बन जाते हो। यदि तुम में यह गुस्सा नही होता तो, शायद मुझ जैसी एक साधारण लड़की को तुम्हारा सहारा नही मिला होता। तुम्हारे इस गुस्से ने ही, सड़े-गले नियमों के प्रति विद्रोह भाव ने ही तो मुझ जैसी अज्ञात-कुलशीला अनाथालय की लड़की को (भाव-विह्वलता के कारण कण्ठ अवरुद्ध हो जाते हैं।)

अमित

(भाव-विह्वल होकर) नहीं सविता, अपने को यों छोटा बता कर मुझे भी छोटा न बनाओ। कौन कहता है तुम एक साधारण लड़की हो। सविता तुम गायत्री के समान ही पवित्र और सविता के समान ही तेजस्वी हो, तपस्विनी हो। मैं क्या बताऊँ सविता। तुम मेरे जीवन की प्रेरणा-शक्ति हो। मैं तुम्हारे बिना आधा-अधूरा ······ ···· ।

[अमित भाव-विह्वलता जनित मानसिक स्थिति से सजग होकर कहता-कहता रुक जाता है]

सविता

(भाव परिवर्तन के साथ उल्लसित होकर) अरे अमित। क्या यों बातें ही करते रहोगे या कुछ पढ़ाओगे भी। (पुस्तक खोलकर अमित के सामने रखती हैं।)

अमित.

जब जीवन का पाठ पढ़ रही हो, तब इस पोथी को बीच में क्यों ला रही हो सविता! आओ हम दोनों मिलकर जीवन की इस पुस्तक में कुछ नये पृष्ठ जोड़ें—स्वतन्त्रता, ममता और न्याय के, शोषण मुक्त समाज के।

ओ! लोकतन्त्र के देवता।
श्रम की स्याही में डुबो,
धर्म की लेखनी से,
तेरे लिए लिखे हम—
नये-नये छन्द।
यातना के कैदखाने में बन्दी,
मानव मुक्ति के
मानवता में निष्ठा
और प्रेम के,
क्योंकि—

अंक २

[मंच पर पहले जैसा ही कमरे का दृश्य। एक मेज पर दर्शकों की ओर पीठ किये अमित कुछ लिखने में तल्लीन दिखलाई पड़ता है। एक ओर से सुभद्रा का प्रवेश। अमित को लिखने में तल्लीन देखकर ठिठक कर क्षणिक खड़ी रहती है। तदनन्तर—कोमल और धीमे स्वर में]

सुभद्रा :

बेटा अमित।

[अमित चुप]

बहुत देर हो गयी बेटा खाना परोस दूं।

[स्वर को जरा ऊँचा करती हुई]

अरे सुनता भी है बेटा।

अमित :

(तन्मयता में व्याघात पड़ने से कुछ खीजता-सा) क्या है माँ?

सुभद्रा :

बेटा! बहुत देर हो गयी, खाना नहीं खायेगा।

अमित :

खा लूँगा माँ। तुम व्यर्थ ही चिन्ता मत किया करो।

सुभद्रा :

तू तो हमेशा यही कहता है। (फिर कुछ याद-सी करती—)
सुन तो अमित।

अमित :

बोलो माँ !

सुभद्रा :

मालूम है तुझे। तेरे दादाजी गाँव से आ गये है।

अमित :

(कुछ सजग-सा होकर) कब आये माँ। अभी कहाँ है ?

सुभद्रा :

आज सुबह ही, तब तू बाहर था। बिन्नी को साथ लेकर बाजार गये हैं, अब आ रहे ही होंगे।

अमित :

(अन्यमनस्क-सा) अच्छा !

सुभद्रा :

बेटा अमित ! देख तो मेरी ओर !

अमित :

(अपनी माँ की मुख-मुद्रा को पढ़ता हुआ-सा) हाँ, कहो माँ !

सुभद्रा :

देख तू अपने को कुछ सम्हाल, कुछ साध बेटा !

अमित :

मैं समझा नही माँ !

सुभद्रा :

यों उखड़ा-उखड़ा रहने से कब तक चलेगा !

अमित :

ऐसा लगता है तुम्हें माँ कि मैं ?

सुभद्रा :

[बड़े स्नेह से अमित के सिर पर हाथ फेरती हुई] देखबेटा ! तू अब मेरा कहा मान !

अमित

(बात को कुछ समझता हुआ तल्खी के साथ) कि मैं झट विवाह करलूं और पट चौके-चूल्हे मे तुम्हारी मदद के लिए बहू ले आऊँ, यही न !

सुभद्रा :

इसमें अनोखी बात क्या है बेटा। सभी तो ऐसा करते हैं। यह तो ससार का नियम है।

अमित :

(उत्तेजित होकर) सभी छीकते हैं इसलिए मुझे भी छींकना चाहिए और फिर चुटकी बजानी चाहिए। फिर सभी झीकते है इसलिए मुझे भी झीकना चाहिए। सभी शादी करते हैं, बच्चे पैदा करते है और फिर एक दिन कीडे मकोड़ों की तरह मर जाते है, यही तो आदमी की नियति है। इसी को तुम संसार का नियम कहती हो। (फिर सुभद्रा की आँखें नम देखकर अपनी उत्तेजना को शान्त करके) देख माँ, तू मुझे समझने की कोशिश कर। तुमने ही तो एक दिन कहा था—पिताजी मुझे अभिमन्यु। ...... खैर। अब छोड़ इस बात को।

सुभद्रा :

तू कह रहा जो सब समझ रही हूँ बेटा। पर तेरे दादाजी का ख्याल आता है। मैंने तो बहुत कुछ सहा है रे और भी सह लूंगी। इस जीवन रूपी यातना के पहाड को तिल-तिल काटा है। अब शेष ही कितना रहा है ?

अमित :

[सुभद्रा के आर्द्रस्वर से भींग कर गीले स्वर से] पर तुम ही बताओ मैं भी क्या करूँ माँ ?

सुभद्रा :

तेरे दादाजी भी तो बहुत टूट चुके हैं बेटा। उनकी अपनी मान्यताएँ अपना दृष्टिकोण और इसके अनुरूप इच्छाएँ-आकाक्षाएँ। उनका बेटा विद्रोही निकला। उनकी मर्जी के खिलाफ शादी कर लेने पर उन्होंने अपने बेटे को कभी क्षमा नही किया। पर उनका पौत्र भी उसी रास्ते चले, यह कैसे सह पायेंगे वह।

अमित :

[कुछ खिन्न होकर] पर वे चाहते क्या हैं माँ, मुझसे ?

[नेपथ्य में खट-खट की ध्वनि के साथ ही खंखारने की ध्वनि]

सुभद्रा :

लो, वह आ गये दिखते हैं। अब तू उन्हीं से पूछना, पर बेटा वृद्ध प्राण है, देख, जहाँ तक हो, उनकी भावना को ठेस न पहुँचाना बेटा।

[सुभद्रा का प्रस्थान। छड़ी टेकते हुए एक वृद्ध व्यक्ति पं० रामनाथ का प्रवेश। पं० रामनाथ अपनी परम्परागत वेशभूषा में धोती और अचकन पहिने हुए हैं। सिर पर सफेद पगड़ी बाँधे हुए हैं तथा ललाट पर तिलक-छापा लगा हुआ है। अमित उठकर अपने दादाजी के चरणों में प्रणाम करता है। पं० रामनाथ अपना वरद हस्त उठाकर 'जीते रहो बेटा' कहकर आशीर्वाद देते हैं। फिर दोनों कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। वीणा छड़ी को नचाती हुई भीतर चली जाती है।]

अमित :

आप कब आए दादाजी ?

पं० रामनाथ :

प्रातःकाल ही आ गया था बेटा। फिर सब्जी लाने वीणा को साथ लेकर बाजार में चला गया था और कहो, सब ठीक तो है ?

अमित :

सब ठीक ही चल रहा है दादाजी! आप ही बताइए गाँव के क्या समाचार हैं ?

पं० रामनाथ :

गाँव के समाचार मत पूछो बेटा! हवा उल्टी चल रही है। उफ क्या जमाना आ गया है। धर्म-कर्म सब भ्रष्ट। ब्राह्मण-शूद्र में कोई अन्तर नहीं। आजकल तो नीच कौम इतनी सिर पर चढ़ गयी है बेटा कि मत पूछो। समाज की आधार शिला वर्णाश्रम-व्यवस्था ही नष्ट हो रही है। अब न जाने क्या होगा हमारी विश्व-विख्यात भारतीय संस्कृति का ? कुछ समझ में ही नहीं आता ?

अमित :

इसमें चिन्ता करने की कोई बात नही है दादाजी। भारतीय संस्कृति का कुछ बिगड़ने वाला नही है। प्राचीन काल मे वर्ण-व्यवस्था का विकृत रूप था ही कब। वर्ण का निर्धारण कर्म से होता था, न कि जन्म से। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र-द्रष्टा एतरेय ऋषि भी इतरा दासी से उत्पन्न सन्तान थे। सदियो से शोषित-उत्पीडित वर्ग यदि अब मुक्ति की कुछ साँस लेता है तो इसमें बुराई क्या है ?

[पं० रामनाथ की क्षुब्ध मुद्रा को देखकर कुछ संकोच मे पड़ता हुआ]

खैर छोडिये इस बात को। मै भी आपसे किस वहम मे उलझ गया ?

पं० रामनाथ .

तो तू ब्राह्मण का पुत्र होकर भी वर्ण-व्यवस्था को नही मानता ?

अमित :

मैने कहा न कुछ अन्य बात कीजिए। इस सम्बन्ध मे शायद आपको मेरे विचार रुचिकर न लगें।

पं० रामनाथ ·

अमित तू भी अपने पिता पर ही गया है। उसी की तरह ही बातें करता है।

अमित :

पर दादाजी ! मैं केवल बातें ही नही करता, अपने विचारो को जीवन मे कार्यान्वित भी करना चाहता हूँ।

पं० रामनाथ :

(कुछ उत्तेजित होकर) अच्छा कर लेना अपने विचारो को कार्यान्वित। पहले यह तो बता इतना पढा-लिखा होने पर भी कही अच्छी जगह जमकर नौकरी क्यों नही करता ? ऐसा कब तक चलेगा ?

अमित :

कोशिश तो करता हूँ दादाजी ! पर कहीं जम नही पाता।

पं० रामनाथ :

कुछ कारण भी तो होगा। आशा थी कि इतनी ऊँची पढाई पढकर कही बड़ा अफसर बनेगा। कुल को उजागर करेगा। पर देखता हूँ ……?

अमित :

' 'कि मैं कपूत निकला, नालायक निकला, किन्तु इसमें मेरा दोष भी क्या है दादाजी। जहाँ कहीं नौकरी करता हूँ, वहाँ सब यही चाहते हैं कि मैं भी उनकी रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार में साथ दूँ। आफिस का काम न करके अफसरों की चमचागीरी करूँ। घरों पर जाकर उनकी बीबियों के नखरे उठाऊँ। चाहे भूखों मरना पड़े, पर यह सब मुझसे कभी नहीं होगा दादाजी।

पं० रामनाथ :

फिर तू क्या करना चाहता है आखिर। ऐसे किस-किस से उलझेगा? [स्नेह से आर्द्र होकर] देख बेटा! सोच तो, तेरी बहिन वीणा कितनी बड़ी हो गयी है। आखिर वह कब तक कुँवारी बैठी रहेगी। और आजकल जमाना भी तो बड़ा खराब है बेटा, ईश्वर न करे कुछ हो-वो गया तो?

अमित :

" (एकदम उत्तेजित होकर) तो इसका मतलब है कि मैं भी तस्करी, रिश्वतखोरी, या भ्रष्टाचारी के कार्यों में सम्मिलित हो जाऊँ। अपनी अन्तरात्मा को चन्द चाँदी के सिक्कों के बदले बेच डालूँ। क्रूर व्यवस्था के निर्मम यन्त्र का पुर्जा बन जाऊँ। और एक दिन घिस जाने पर निर्दयतापूर्वक फेंक दिया जाऊँ। आप क्या यही चाहते हैं मेरे से?

प० रामनाथ :

(कुछ क्रुद्ध होकर) जब सारी दुनिया ही ऐसे चल रही है, तब तुम्हारे ही कौन सुर्खाब के पर लगे हैं?

अमित :

सारी दुनिया रिश्वत खाती है तो मैं भी खाने लगूँ। सारी दुनिया जहन्नम में जाती है तो मैं भी जहन्नम का रास्ता लूँ। क्या यही चाहते हैं आप? क्षमा करें दादाजी, यह मुझसे नहीं होगा, चाहे कितनी ही कीमत चुकानी पड़े।

प० रामनाथ :

(कुछ तीक्ष्ण स्वर में) कीमत तो हमें चुकानी पड़ रही है बेटा? जो हमारे कुल में तेरा जैसा भागीरथ पैदा हुआ। सुभद्रा बेचारी जीवनभर दुःख सहती रही और अब भी कपड़े सी-सीकर सबका भरण-पोषण कर रही है। मैं भी

कब तक टिका रहूँगा। न मालूम कब जीवन-दीप बुझ जाय। चिन्ता अपनी नही है बेटा। चिन्ता तो वीणा की है, उसका क्या होगा? [कहते-कहते पं० रामनाथ की आँखें नम हो जाती हैं, किन्तु अंगोछे के छोर से पोंछ लेते हैं।]

अमित :

(कुछ मुलायम होकर सफाई देता हुआ-सा) यह नही दादाजी कि मैंने सर्विस के लिए कोई प्रयत्न ही न किया हो। प्रयत्न करने पर एक अच्छी-सी पोस्ट सोशियल वेलफेयर आफीसर की मिल भी गयी थी, किन्तु वहां दफ्तर में देखा तो हरेक कर्मचारी के पीछे किसी न किसी की सिफारिश का बिल्ला लगा हुआ था। दफ्तर का कोई कार्य ही नही करना चाहता। बिना रिश्वत के कोई फाइल हिलती ही नहीं। कार्यालय के अन्तर्गत संचालित महिला-समाज-कल्याण केन्द्र की तो हालत बहुत खराब निकली। वह तो अनैतिक व्यापार का अड्डा बन गया था। जब इस स्थिति में मैंने कुछ सुधार लाने में प्रयत्न किये तो सब कर्मचारी मेरे विरुद्ध हो गये। उन बाबुओं में एक मन्त्री जी का दूर का रिश्तेदार था। अतः सब बाबुओं ने उसके साथ मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रच डाला। मिनिस्टर ने मिथ्यारोप लगा कर मुझे रिवर्ट करके अन्यत्र भेजने के आदेश निकला दिये। अब ऐसी स्थिति में आप ही बताइए दादाजी कि एक स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए सिवाय अपनी सर्विस से स्तीफा देने के अन्य क्या उपाय होता। जगह-जगह सर्विस की और जगह-जगह यही दुष्चक्र मिला।

पं० रामनाथ :

किन्तु बेटा अमित! ऐसे माहोल में अपने को टिकाने के लिए एडजेस्टमैण्ट करके, कुछ मिल-जुल के चलना ही पड़ेगा। खैर अब छोड़ो इस बात को। मैं तुम से एक खास विषय पर बात करना चाहता हूँ।

अमित :

(अनमना-सा होकर) कहिये दादाजी।

पं० रामनाथ :

सुभद्रा ने शायद तुम से जिक्र किया भी होगा।

[अमित चुप]

देख बेटा ! तेरे लिए एक लड़की देख ली है मैंने । घर के काम-काज में प्रवीण, पढ़ी-लिखी बड़ी सुशील लड़की है । खानदान अच्छा है और धनाढ्य भी है बेटा ! दहेज भी ठीक मिलेगी । तुमने भोपाल के ज्योतिषमार्तण्ड पं० उमादत्त तिवारी का नाम सुना होगा न ! बड़े प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं । हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति जी की विजय की घोषणा अखबारों में उन्होंने पहले से ही छपवा दी थी । अपनी ज्योतिष विद्या के चमत्कार के कारण मंत्रिमण्डल में भी उनकी गहरी पहुँच है । उनकी ही कन्या है । उससे तेरी सगाई की बात पक्की भी करली है । विलम्ब करने से भी क्या फायदा ! ऐसा घर और लड़की कोई बार-बार थोड़े ही मिले है ।

[अमित अपने आवेश को दबाकर चुप रहने का प्रयत्न करता है]

सगाई का महूर्त भी ।

अमित :

(बीच में ही बात काट कर) किन्तु दादाजी, अभी तक तो मैं किसी नौकरी या कोई काम-धन्धे पर जम ही नहीं पाया । ऐसी स्थिति में एक बोझ अपने सिर पर बांध लेना क्या समझदारी की बात होगी !

पं० रामनाथ :

तेरी नौकरी की दृष्टि से यह सम्बन्ध होना और भी जरूरी है अमित । ज्योतिषमार्तण्ड पं० उमादत्त तिवारी को तुम नहीं जानते ! अपने ज्योतिष, ज्ञान के कारण बड़े-बड़े मिनिस्टरों तक उनकी पहुँच है । किसी भी मिनिस्टर से कहकर वे तुम्हें कोई अच्छे पद पर नौकरी दिलवा देंगे ।

अमित :

[अपने को जब्तकर अप्रिय स्थिति को टालने का प्रयत्न करते हुए] किन्तु दादाजी, इतनी जल्दी भी क्या है । मुझे कुछ सोचने का अवसर तो दीजिए ।

प० रामनाथ :

इसमें सोचने-विचारने की क्या बात है बेटा । अरे मैं तेरा दादा हूँ दादा ! भला मेरे अलावा तेरे भले-बुरे की बात कौन सोच सकता है ? मैंने तिवारीजी को वचन दे दिया है बेटा ! अब यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है । अपने मान्य-कुल की प्रतिष्ठा का ।

अमित :

(तिलमिलाकर) पर इसके लिए मैं क्या करूँ ?

[कुछ क्षणों के लिए मंच पर चुप्पी छा जाती है और वातावरण गम्भीर हो जाता है। घर के भीतर के अहाते से वीणा छड़ी को नचाते हुए प्रवेश करती है, किन्तु अमित व पं. रामनाथ की चुप्पी देखकर तथा स्थिति की गम्भीरता को भांपकर ठिठक जाती है। तदनन्तर एक कोने में जहां कुर्सी रखी है, बैठ जाती है और मेज पर रखी किसी फिल्मी पत्रिका को उठाकर उसके पृष्ठ उलटने-पलटने लगती है।]

पं० रामनाथ :

तो तुम्हें स्वीकार है न ?

अमित :

क्या ?

पं० रामनाथ :

यही तेरी विवाह की बात।

[विवाह शब्द को सुनकर वीणा अपना मुंह पत्रिका में छिपाए हुए उन दोनों का वार्तालाप सचेष्ट हो सुनने लगती है।]

अमित :

कह तो दिया आपसे।

पं० रामनाथ :

[खीजकर] क्या कह दिया ? अरे तू अपने दादा की बात नहीं मानता, पर अपनी माँ की तो सोच बेटा। रात-दिन घर के काम-धन्धे में अकेले ही जुटी रहती है। बहू आ जायेगी, उसे भी सहारा मिलेगा।

अमित :

[बात से बचता हुआ] पर अभी वीणा का विवाह भी तो करना है। पहले उसके विवाह की भी तो सोचिये।

पं० रामनाथ :

तुम्हारी यह बात भी सही है अमित ! बेटा उसके विवाह से मानो। क्या

बिना दहेज दिये आजकल अच्छा लड़का मिल जायेगा और दहेज के लिए पैसे कहाँ से लायेंगे। तेरे ससुराल वालों से जो दहेज आयेगा, वीणा के विवाह में काम आ जायेगा। फिर पं. उमादत्त जी तुझे अच्छी नौकरी पर भी लगवा देंगे।

अमित :

[उकताकर बात को समाप्त करने की मुद्रा में] पर दादाजी। क्या विवाह गुड्डे-गुड़ियों का खेल है।

पं० रामनाथ .

[तीक्ष्ण स्वर में] जो कहना चाहता है साफ-साफ कह न।

अमित .

यही कि अपने जीवन साथी का चुनाव क्या बिना देखे-समझे !

पं० रामनाथ :

[उत्तेजित होकर व्यंग्य भरे स्वर में] ओह ! समझा ! तो तुमने किसी लड़की को देख-समझ रखा है क्या। बोल ! बताता क्यों नहीं ?

[वातावरण में क्षणिक स्तब्धता छा जाती है। अमित चुप रहता है। वीणा अपनी कुर्सी छोड़कर अमित के समीप खड़ी हो जाती है और पं० रामनाथ की ओर उन्मुख हो कहती है।]

वीणा ·

भैया नहीं बतायेगा दादाजी। मैं बताती हूँ। भैया ने एक लड़की को—

अमित :

[क्रुद्ध होकर वीणा को बीच में ही रोकता हुआ] बिन्नी !

पं० रामनाथ :

क्यों रे, इतनी बड़ी लड़की को इस प्रकार क्यों डांट रहा है ? उसे पूरी बात कहने दे ना ! (वीणा से) हाँ बेटा कहो तो ! कौन लड़की है वह ?

वीणा :

सविता दीदी ! वैरी स्वीट, वैरी-वैरी चार्मिंग है दादाजी। अमित भैया उसे बहुत चाहते हैं।

अमित :

विनो तू अपनी बकवास बन्द नहीं करेगी ?

प० रामनाथ :

(वीणा से) हाँ, वीणा तुम कहो ! क्या करती है यह लड़की। उसके माता-पिता कहाँ रहते हैं ?

वीणा :

यह सब भैया से ही पूछ लो न आप।

प० रामनाथ :

भैया से क्या पूछ लूँ बेटा ! जितना तू जानती है, वह तो बतला दे।

वीणा :

सविता दीदी समाज-कल्याण विभाग में सोशल ऑरगनाइजर हैं दादाजी। वर्किंग वीमन्स हॉस्टल में रहती हैं। माता-पिता तो बेचारी के हैं ही नहीं ? अनाथालय में ही पालन-पोषण हुआ है। लेकिन बड़ी अच्छी लड़की है दादाजी। लड़कियाँ तो अभी से सविता दीदी को मेरी भाभी बनाकर मुझे चिढ़ाती रहती हैं।

अमित :

(आवेश से) तो तू अपनी बकवा[illegible] है या नहीं। या मैं अभी तुझे बताऊँ। इडियट !

प० रामनाथ :

वीणा :

(तमक कर अमित से) मैं झूठ कह रही हूँ। पार्क में सविता के साथ तुम घण्टों बैठकर बतियाते नहीं रहते ?

अमित :

(वीणा की ओर उन्मुख होकर) तो इसमें भी कोई बुराई है। गुनाह है किसी से बात करने में ?

वीणा :

यह मैं कब कहती हूँ ?

प० रामनाथ :

लेकिन एक अज्ञात कुल शील जिसके माँ-बाप, जाति, कुल किसी का भी कुछ पता नहीं।

अमित :

किन्तु वह एक इन्सान तो है, मानव तो है।

प० रामनाथ :

(उत्तेजित होकर) तो तेरा मतलब है, वह एक नीच कुल की आवारा लड़की हमारे पवित्र ब्राह्मण कुल की पुत्र-वधु बनेगी। यही कहना चाहता है न तू ?

अमित :

(क्रोधावेग से) एक शरीफ लड़की के प्रति यों अपशब्द मत बोलिये दादाजी।

पं० रामनाथ :

उस लड़की के लिए अब तो मेरे से भी सवाल-जवाब (कुछ रुककर) 'अच्छा तू ही बता किस जाति की है वह लड़की ?'

अमित :

रक्त की कोई जाति नहीं होती दादाजी। सबके रक्त का रंग लाल होता है। भगवान् बुद्ध के ...।

पं० रामनाथ :

(बीच में ही बात काट कर) अरे भगवान बुद्ध की बात छोड़, अपनी बात कर। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर सारे धर्म-कर्म, वर्ण-व्यवस्था को भ्रष्ट क्यों

अमित :

फिर तू अपनी बकवास बन्द नही करेगी ?

पं० रामनाथ :

(वीणा से) हाँ, वीणा तुम कहो ! क्या करती है वह लड़की। उसके माता-पिता कहाँ रहते हैं ?

वीणा :

यह सब भैया से ही पूछ लो न आप।

पं० रामनाथ :

भैया से क्या पूछ लूँ बेटा ! जितना तू जानती है, वह तो बतलादे।

वीणा :

सविता दीदी समाज-कल्याण विभाग मे सोशल ऑरगनाइजर है दादाजी। वर्किंग वीमन्स होस्टल में रहती है। माता-पिता तो बेचारी के हैं ही कहाँ ? अनाथालय में ही पालन-पोषण हुआ है। लेकिन बड़ी अच्छी लड़की है दादाजी। लड़कियाँ तो अभी से सविता दीदी को मेरी भाभी बतलाकर मुझे चिढ़ाती रहती है।

अमित :

(आवेश से) तो तू अपनी बकवास बन्द करती है या नही। या मैं अभी तुझे बताऊँ। इडियट-!

पं० रामनाथ :

तो बात इस हद तक बढ गई। (अमित से) क्यो रे। बिट्टी जो यह सब कह रही है ?

अमित :

[आवेश मे] मुझे कुछ पता नही।

पं० रामनाथ :

(उत्तेजित होकर) तुझे पता नही तो फिर किसे है ? क्या वीणा झूठ बोल रही है ?

अमित :

इस लडकी का दिमाग तो ! पढ़ने-लिखने में तो इसका मन लगता नही, बस बिना समझे-बूझे बीच-बीच यो ही टाँग अड़ाती रहेगी।

वीणा :

(तमक कर अमित से) मैं झूठ कह रही हूँ। पार्क में सविता के साथ तुम घण्टों बैठकर बतियाते नहीं रहते ?

अमित :

(वीणा की ओर उन्मुख होकर) तो इसमें भी कोई बुराई है। गुनाह है किसी से बात करने में ?

वीणा :

यह मैं कब कहती हूँ ?

प० रामनाथ :

लेकिन एक अज्ञात कुल शील जिसके माँ-बाप, जाति, कुल किसी का भी कुछ पता नहीं।

अमित :

किन्तु वह एक इन्सान तो है, मानव तो है।

प० रामनाथ :

(उत्तेजित होकर) तो तेरा मतलब है, वह एक नीच कुल की आवारा लड़की हमारे पवित्र ब्राह्मण कुल की पुत्र-वधू बनेगी। यही कहना चाहता है न तू ?

अमित :

(क्रोधावेग से) एक शरीफ लड़की के प्रति यों अपशब्द मत बोलिये दादाजी।

पं० रामनाथ :

उस लड़की के लिए अब तो मेरे से भी सवाल-जवाब (कुछ रुककर) अच्छा तू ही बता किस जाति की है वह लड़की ?

अमित :

रक्त की कोई जाति नहीं होती दादाजी। सबके रक्त का रंग लाल होता है। भगवान् बुद्ध के…।

पं० रामनाथ :

(बीच मे ही बात काट कर) अरे भगवान बुद्ध की बात छोड़, अपनी बात कर। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर सारे धर्म-कर्म, वर्ण-व्यवस्था को भ्रष्ट क्यों

कर रहा ! तुम लोग धर्म और संस्कृति को नष्ट करने मे क्यो तुले हुए हो, .खर ?

अमित :

आप किस संस्कृति की बात कर रहे हैं दादाजी ? हमारी संस्कृति मे जाति-पाँति के संकीर्ण बन्धन थे ही कब ? अज्ञात कुलशील होकर भी 'सत्य-काम जाबालि' वैदिक ऋचाओ के मृष्टा और मंत्र-स्ष्टा थे। वैदिक युग मे अनुलोम और प्रतिलोम विवाह होते थे। हमारी संस्कृति इतनी संकीर्ण नही है।

प० रामनाथ :

(और भी अधिक आवेश में होकर) तो तू अब अपने दादा को भी धर्म और सस्कृति का नया पाठ पढायेगा ? अरे जोशी कुल में जन्म लेकर, अपने कुल के कलक न लगा बेटे। सोच तेरी इस बहिन को अपनी जाति-बिरादरी मे कौन ब्याह करेगा ? अपनी नही तो, इसकी तो सोच !

वीणा :

(तुनक कर पं. रामनाथ से) पर दादाजी आप दोनों की बहस में मुझे क्यो घसीट रहे है ? आप लोग मेरी चिन्ता न करें। -

प० रामनाथ :

चिन्ता की बात ही है बेटी। तू अब कौन-सी कुवारी ही घर मे बैठी रहेगी। यह भाग्य ही खोटे है, वरना अभी तक तेरे हाथ कभी के पीले हो जाते। (हताश भाव से) हे ईश्वर ! न जाने अब इस घर का क्या होने वाला है ? [आँखें मींच अपना सिर कुर्सी की पीठ पर टिका देते हैं। निमिष मात्र में ही सजग होकर चीखते से स्वर में सुभद्रा को पुकारते हैं, आवाज सुनकर हड़बड़ाते हुए सुभद्रा का प्रवेश।]

सुभद्रा :

(सिर के आँचल को कुछ और आगे खींचकर) कहिये दादाजी ! आप इतने परेशान क्यो है। क्या आपकी कुछ तबीयत खराब है ? (फिर अमित की ओर देखकर) क्योरे अमित क्या बात है ?

[अमित चुप रहता है]

पं० रामनाथ :

अब यह क्या बोलेगा बहू। यह तो अपने जोशी कुल को कलंक करने पर तुला हुआ है।

सुभद्रा :

(अमित से) बोलता क्यों नही अमित। आखिर तुमने दादाजी को क्या उल्टा-पुल्टा कह दिया रे ?

अमित :

कुछ भी तो नही माँ। दादाजी तो व्यर्थ मे ही परेशान हो रहे है।

पं० रामनाथ :

मैं व्यर्थ में ही परेशान हो रहा हूँ ? और तू उस कुलच्छनी लडकी के पीछे मेरे वचन का मूल्य और अपने परिवार की प्रतिष्ठा को भी खोने पर तुला हुआ है।

अमित :

(उत्तेजित होकर) तो फिर सुनिये दादाजी जिस शरीफ लडकी को आप बिना जाने ही कुलच्छनी कह रहे हैं, मैं जब कभी भी विवाह करूँगा तो उसी के साथ करूँगा। मैं आपके कुल-जाति, धर्म जनित भेद-भाव के जड बन्धनों को स्वीकार नही करता। भले ही मुझे अपने सिद्धान्तो का कितना ही मूल्य क्यो न चुकाना पडे ?

पं० रामनाथ :

(सुभद्रा से) सुन ली न बहू तुम्हारे इस अभिमन्यु की बात। अपने सिद्धान्तों का पहला पाठ वह अपने दादा को ही सिखाने चला है। (हताश भाव से) हे ईश्वर ! अब क्या होने वाला है इस घर का ? (डबडबाती आँखों को अपने अंगोछे के छोर से पोंछते हुए) लो बहू अब मैं तो वापस गाँव जाता हूँ। इस घर मे मेरे लिए कोई स्थान नही बचा है। मैं ठहरा पुराने विचारो का आदमी।

[पं० रामनाथ अपनी छड़ी उठाकर खड़ा हो जाता है।]

सुभद्रा :

[इस अप्रत्याशित घटना से बिलखती हुई] नही दादाजी ! आप कही मत जाइये। जब आप ही ऐसा करेंगे तब।

वीणा

(छड़ी पकड़कर) नहीं दादाजी मैं आपको हर्गिज नहीं जाने दूँगी।

पं० रामनाथ :

लेकिन जिस घर में मेरा पौत्र ही मेरा अपमान करे वहाँ ……।

अमित :

(उत्तेजित होकर) तब लीजिए मैं ही चले जाता हूँ इस घर से। मैं ही तो नकारा हूँ न। पारिवारिक कलह का मूल कारण। आप सब सुख से रहियेगा। [अमित तीर की तरह निकल जाता है। पं० रामनाथ, सुभद्रा व वीणा, तीनों अवाक् देखते रह जाते हैं। वातावरण में विषाद की कालिमा छा जाती है। नेपथ्य में एक विषाद की ध्वनि उभरती है। कुछ क्षण पश्चात् मंच पर अंधेरा हो जाता है।]

[मंच पर धीरे-धीरे पुनः प्रकाश। एक ओर से हरवंश का प्रवेश एवं दूसरी ओर से अमित का प्रवेश। हरवंश चमक-दमक पूर्ण वेशभूषा में होता है।]

अमित :

अरे हरवंश ! खूब मिले भाई तुम भी, इतने दिनों कहाँ गायब हो गये थे। कहो कैसी गुजर रही है ?

हरवंश :

यार सब ठीक चल रहा है। पिंकू के लिए कॉपियाँ-किताबें लेकर आ रहा हूँ। कान्वेंट में एडमीशन दिलवाना है भाई। बड़ी मुसीबत है। आजकल स्कूल में बच्चों के एडमीशन दिलाना भी तो कितना मुश्किल हो गया है।

अमित :

अरे तो तुमने शादी कब की हरवंश और उसका रिजल्ट भी इतना जल्दी। बड़ा चुप्पा है रे तू। सब काम चुपके-चुपके। हमे खबर तक नहीं।

हरवंश :

(कुछ झेंप कर) भाई अमित क्या बताऊँ। सब काम इतना जल्दी में हुआ कि कुछ खबर ही नहीं दे पाया। अच्छा चलूँ भाई, देर हो रही है। कल

टेन्डर सबमिट करने की लास्ट डेट है। यदि डेट निकल गई तो ... लाखों का नुकसान समझलो।

अमित :

तो तू इतना बड़ा ठेकेदार हो गया है क्या आजकल ? कुछ बता भी, यह सब कैसे हुआ। इतने अर्से बाद मिलने पर भी तू तो कन्नी काटना चाह रहा है। चल, उस बेंच पर बैठकर कुछ बातें कर लें।

[हरवंश अनमने मन से अमित के साथ एक बेंच पर बैठ जाता है]

हां, तो बता तेरे सब हाल!

हरवंश :

यह तो सब उस वाहे गुरु की कृपा है अमित, वरना कहाँ तो वह दिन जब कि नौकरी की तलाश में रोड मास्टरी करना पड़ रही थी, कहाँ आज लाखों का व्यवसाय, इस जान को पल भर की फुर्सत नहीं।

अमित :

तो मतलब यह है कि बड़े ठाठ-बाट में हो।

हरवंश :

ठाठ-बाट तो क्या है अमित। हाँ, माल रोड पर एक नया फ्लैट बन रहा है जिसमें दस-पन्द्रह लाख तो लग ही जायेंगे।

अमित :

यह अल्लादीन का चिराग तुम्हे मिला कहाँ से ?

हरवंश :

यह तो लक की बात है यार। कहावत है न जब ईश्वर देता है, तब छप्पर फाड़कर देता है। कभी-कभी बुरी बात भी अच्छाई का कारण बन जाती है।

अमित :

(जिज्ञासा से) वह कैसे ?

हरवंश :

तो लो जब सुनना ही चाहते हो तो बतला ही दूं। तुम तो मेरे पुराने दोस्त हो। तुमसे क्या छिपाना। एम० ई० कर लेने के पश्चात् बड़ी सिफारिश

पर पब्लिक वर्क्स डिपार्टमैन्ट मे ओवरसियर की पोस्ट मिल गई। यह भी .ब हुआ जब सेक्रेट्रियेट मे कोई अपना दूर का रिश्तेदार निकल आया। इसके बाद मजबूरन ठेकेदारोंके और एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के मिले जुले जाल में फंस गया। झूठे मास्टर रोल, झूठे कन्शट्रेक्शन्स के प्रमाण-पत्र। सबकी जेबें गर्म। बडे सहेजकर पकड़े हुए सच्चाई और ईमानदारी के परिन्दे हाथ से फिसल कर दूर आकाश मे उड गये। केवल बच रह गई, यथार्थ की ठोस दुनिया। पर एक दिन एक्जीक्यूटिव इंजीनियर ने ही अपने बचाव के लिए मुझे सस्पेंड कर दिया। यह सस्पेंशन मेरे लिए तो वरदान बन गया। और देख लो उस नौकरी के लात मार कर एक बड़ा ठेकेदार बन गया हूँ। यह दुनिया यों ही चलती है अमित। (उठते हुए) अच्छा भाई चलूं। सिमेंट का परमिट भी लेना है। देर हो जायेगी। हां, हो सके तो कभी मिलना। घर आना।

[हरवंश का प्रस्थान। अमित बंच पर बैठकर कुछ सोचने लगता है। नेपथ्य में मोटर गाड़ी का हार्न बजने की ध्वनि। मंच पर शहजात का प्रवेश। शहजात कीमती सूट पहिने हुए है। चाल एवं चेष्टाओ में एक बड़ा अफसर होने का अहसास]

शहजात :

(बंच पर बैठे अमित के समीप आकर उसे पहिचान लेने की मुद्रा में) अरे अमित तुम यहां इस प्रकार अकेले बैठे-बैठे क्या सोच रहे हो भाई। पहले तो दूर से मैंने पहचाना ही नही। यह क्या सूरत बना रखी है तुमने ?

अमित :

(कुछ आश्चर्यमिश्रित उल्लास भाव से) ओह शहजात भाई तुम ! कहो, कैसे हो ? बडे अर्से बाद दिखलाई पड़े।

शहजात।

ठीक हूँ भाई ! अब यहाँ एस० डी० ओ० होकर आ गया हूँ। मुख्यमन्त्री से कहकर एम० पी० साहब ने मेरा पोस्टिंग भी यहीं करवा लिया है। भाई ! आई० ए० एम० के इण्टरव्यू मे लेकर एम० डी० ओ० के पोस्टिंग तक मे

उन्हीं का हाथ है। बड़े अच्छे आदमी है। अब यों तो दुनिया ... है।
दुनिया का मुंह कौन पकड़ सकता है।

अमित :

पर सुना है उन्होंने झोंपड़ पट्टी से गरीब मजदूरों को गैर कानूनी ढंग से बेदखल करवा के उस जमीन पर अपनी कोई नई सीमेंट फैक्टरी खोल रहे हैं।

शहजात :

अरे तो इसमें बुराई क्या है! वे गरीब तो कहीं भी रह लेंगे। क्या वे जमीन अपने साथ लाये थे? पर सीमेंट फैक्टरी से तो जिले की तरक्की ही होगी। बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलेगा। (फिर अमित के कान के पास कुछ फुसफुसाता है, वह सुनाई पड़ने लगता है) भई, मुख्य मुद्दा तो समझ ही गये न! जब मन्त्री बनाने मे हो इन्हीं का हाथ था, तब मन्त्री अपना बदला चुकायेंगे ही न, अब हमें ही देख लो न। बहुत-सी बातें ऐसी करनी पड़ती हैं जिसकी गवाही मन नहीं देता। ...... कोटा, परमिट, लाइसेंस, सभी कुछ, अब समझलो सभी कुछ। एहसान का बोझ सिर पर है।

अमित :

(व्यंग से) पर शहजात! तुम इतने होशियार तो न थे। फिर एक दम कैसे बदल गये?

शहजात :

जमाने का दस्तूर सबको बदल देता है अमित! याद रखो, एक दिन तुम्हें भी बदल देगा।

अमित :

लेकिन हम चाहें तो जमाने को बदल भी सकते हैं शहजात! चाहिए दृढ संकल्प शक्ति के साथ उच्चतर जीवन की सम्भावनाओं मे अमिट विश्वास। अकर्मण्य बनकर समय की धार मे बहते जाना तो सहज है, किन्तु अपनी कर्म-शक्ति की सहस्र-सहस्र बाहुओ से, लक्ष्य हीन समय की धार को निर्धारित लक्ष्य की ओर मोड देना ही तो बड़ा कठिन कार्य है। जीवन की सार्थकता इसी में है।

.त :

लेकिन जिस सार्थकता की बात तुम कर रहे हो, उसका अन्तिम हल तो निरर्थकता ही है अमित। वक्त किसी का इन्तजार नही करता। सावधान रहकर वक्त का फायदा उठा लो तो ठीक, वरना गया वक्त फिर हाथ नहीं आता है ?

अमित :

लेकिन वक्त का फायदा उठाने का मतलब यह तो नहीं कि इन्सान वक्त के हाथों खिलौना बन जाय। वह अपनी इन्सानियत को भूलकर एय्यास प्रेतों का पुजारी बन जाय। शोषण और उत्पीड़न के अमानवीय क्रूर तन्त्र का पुर्जा बन जाय। (शहजात निरुत्तर) खैर छोड़ो यार इन बातों को। आज बहुत अर्से बाद तो मिले। मैं भी किस बहस में उलझ गया। हाँ, कुछ और बातें करें। (मुस्कराकर) कहो अभी शादी-वादी की या नहीं।

शहजात :

भाई बगले पर आओ कभी तो अपनी भाभी से भी मिल लेना। लो चलूँ भाई अब, देर हो रही है। एम०पी० साहब के यहाँ जा रहा था कि तुम दिखलाई पड़ गये।

अमित :

क्यों एम० पी० साहब के यहाँ कोई विशेष कार्यक्रम है।

शहजात :

हाँ भाई, एम० पी० साहब ने आज काकटेल पार्टी अरेंज की है जिसमें कुछ विशिष्ट व्यक्ति भाग लेंगे। मुख्य मन्त्री भी तशरीफ लायेंगे। लो, इस तरफ ही चलना हो तो रास्ते में ड्राप कर सकता हूँ।

अमित :

धन्यवाद ! मैं अभी यहीं ठहरूँगा।

[शहजात का प्रस्थान। नेपथ्य में कार का हार्न सुनाई पड़ता है और स्टार्ट होने की ध्वनि होती है। मंच पर अन्धकार।]

[मंच पर शनैः-शनैः पुनः प्रकाश होता है। अमित कुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ता हुआ दिखलाई दे रहा है। सामने मेज रखी हुई है।]

अमित :

(अखबार को इस प्रकार पढ़ता है कि सबको सुनाई दे सके।) वियत... मे भीषण बमबारी······ हवाई अड्डा पूर्णतः ध्वस्त, सहस्रों व्यक्ति मरे, सहस्रों घायल, क्षत-विक्षत-अपंग। अमरीका द्वारा पाक को हथियारों की सप्लाई। भारत ने अन्तरिक्ष भू उपग्रह आर्यभट्ट छोड़ा। नरबलि की एक और सनसनी खेज घटना। पिता ने पुत्र की बलि दी। असम में भाषायी दंगे। अहमदाबाद में साम्प्रदायिक उन्माद। गुजरात मे भयकर सूखा, भीषण अकाल, लाखों लोग भूख से मरे। विधायक के घर से डाकू गिरफ्तार। तस्करों को सुविधाएँ। भारतीय हाकी फैडरेशन, क्रीकट टीम, रेहाना सुल्ताना""जीनत"······।

[सविता का हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए प्रवेश]

सविता :

अमित छोड़ो इस अखबार को। लो पहले चाय पीलो।

अमित :

देखो सविता ! इस चित्र को देखो तो। मानव-जीवन की कितनी बेहद दर्दनाक भयंकर ट्रेजेडी है यह ?

[सविता अखबार में छपे चित्र को देखती है जिसमें वियतनाम युद्ध में मरे हुए शिशु को अपने हाथों में लिए एक माँ बिलख-बिलख कर रो रही है, दूसरे चित्र में अकाल पीड़ित क्षेत्र का चित्र है जिसमें एक स्त्री की गोद में बालक भूख से बिलख रहा है और जानवरों के कंकाल दृष्टिगोचर हो रहे हैं।]

ये हथियारो के सौदागार। खोखले वादों के लेबिल लगाकर मानवता का कैसी क्रूरता से संहार कर रहे है—व्यक्ति स्वातन्त्र्य, साम्यवाद, समाजवाद, लोकतन्त्र, डिक्टेटरशिप। सविता कैसा शब्द-जाल है यह ? अब तो शब्दो के अर्थ ही खो गये हैं।

सविता :

(अमित के अन्तिम वाक्य को सुनकर कुछ याद करती हुई-सी) अमित तुम्हारी कविता की पंक्तियाँ भी कुछ ऐसे ही भाव को लिए हुए है—'कोलाहल में शब्द खो गया।'

र्त :

'भरी भीड मे व्यक्ति खो गया ।'

सविता :

वाह अमित ! तुमने तो आधुनिक युग की विडम्बना को लगता है, केवल इन दो पंक्तियो मे ही कैद कर लिया, ठीक ही तो है—आचरण विहीन सिद्धान्त केवल शब्द-जाल ही तो रह जाते है ।

अमित :

और कर्मच्युत शाब्दिक घोषणाएँ शव के समान निष्प्राण ।

सविता :

जब हमारे सिद्धान्त आचरण की अग्नि और कर्म के तेज से सम्पोषित होगे—

अमित ·

तभी वे लोक कल्याणकारी शिव का रूप ग्रहण कर पायेगे । यही कहना चाहती हो न !

सविता :

लेकिन अमित कभी-कभी हथियारो की इस भीषण होड़ को देखकर लगता है कि मानव-समाज की नियति स्वय अपनी आत्महत्या की ओर बढ़ रही है।

अमित .

लगता तो मुझे भी ऐसा ही है सविता कि कभी भूल से ही यदि आणविक अस्त्रशस्त्रो का स्विच आन हो जाय तो एक-दो आणविक बम विस्फोट से समस्त मानवता नष्ट हो जाय, किन्तु ऐसा होगा नही सविता । क्योकि मानव के पास विवेक का अकुश जो है ।

सविता

और अमित सोचती हूँ यदि हथियारो की बेहताशा होड मे लगने वाले वे करोड़ो डालर एव मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति को जीवित रखने के लिए करोड़ो डालर के सामान को समुद्र में बहाने से रोक लिया जाय और इसे समग्र मानवता के कल्याण के लिए व्यय किया जाय तो ससार मे कोई व्यक्ति भूखा-नगा न रहे ।

अमित :

समस्त वसुन्धरा भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक आनन्द से खिल उठे

सविता :

यह एक स्वप्न ही तो है अमित ।

अमित :

लेकिन आदमी यदि चाहे तो अपनी संकल्प-शक्ति और कर्म-शक्ति से स्वप्न को सच्चाई में भी बदल सकता है ।

सविता :

तो तुम बदलोगे सच्चाई में स्वप्न को ?

अमित :

यदि तुम साथ दो तो !

सविता :

[सस्मित] नही तो !

अमित :

तब कवीन्द्र रवीन्द्र के गीत की एक पंक्ति ही मेरा सम्बल बनेगी । 'एकला चलो रे' । तब मैं अपने पथ पर अकेला ही चलने के लिए अभिशप्त होऊँगा ।

सविता :

लेकिन जीवन के झंझावातों में कही पथ भूल गये तो ।

अमित :

तो फिर से पथ खोज लूँगा या नया पथ बना लूँगा ।

सविता :

[व्यंग से] तब तुम्हारी पूर्व घोषित उस प्रेरणा-शक्ति का क्या होगा ?

अमित :

(व्यंग के भाव को समझकर सस्मित) तब तुम्हारे सामीप्य की स्मृति-गन्ध ही मुझ में प्रेरणा के मोहक पुष्प खिलायेगी ।

सविता :

(अमित की बात से कुछ उल्लसित होकर) लो, छोड़ो दर्शन और संसार की इन थकाने वाली बातों को । कोई और बात करो ।

अमित :

और बात ! बातें ही तो कर रहे हैं।

सविता :

नहीं, अपनी बात। निजी बात।

अमित :

मसलन।

सविता :

अब तुम अपने बारे में क्या सोच रहे हो ?

अमित :

अपने बारे में ?

सविता :

हाँ, अपने बारे में। समाज, राष्ट्र, विश्व, इन बातों के अलावा भी।

अमित :

तुम्हीं करो कोई बात।

सविता :

लो, मैं क्या करूँ कोई बात। अच्छा, झगड़ा करके घर से इस प्रकार क्यों निकल पड़े तुम ?

अमित :

यह तुम्हें मालूम है।

सविता :

वीणा से जो पता चला है, उसमें तो मैं ही अपराधी सिद्ध होती हूँ। तुम मेरे लिए अपने दादाजी से क्यों झगड़ पड़े थे।

अमित :

यह बताने की जरूरत है मुझे ?

सविता :

(मान करने की मुद्रा में) लो ! अब तुम मुझे ही डाँटने लगे।

अमित :

मैं डाँट नहीं रहा, सिर्फ कह रहा हूँ। (क्षण भर के लिए रुककर) सविता मेरी बात सुनोगी।

सविता :

सुन तो रही हूँ।

अमित :

मैं तुम से विवाह करना चाहता हूँ।

सविता :

(आश्चर्य मिश्रित प्रसन्न मुद्रा में) मुझसे ?

अमित :

(उद्विग्न होकर) ओह ! तुमसे नहीं तो और किससे ?

सविता :

(विह्वल होकर) मैं एक अज्ञात कुलशील। मेरे लिए तुम्हारा यह पावन प्रेम ही बहुत कुछ है अमित। इससे, अधिक मैं सहेज नहीं पाऊँगी।

अमित :

अज्ञात कुलशील की बात छोड़ो सविता। इस बात को लेकर तो दादाजी से भी झगड़ा हो चुका है।

सविता :

यही तो मैं कहना चाहती हूँ अमित कि बिना दादाजी की इच्छा के मैं उस घर की बहू कैसे बन सकती हूँ।

अमित :

मैं तुमसे सिविल मैरिज करना चाहता हूँ।

सविता :

लेकिन इतनी जल्दी भी क्या है ? वैसे मैं तुम्हारे जीवन-पथ की सहयात्री हूँ हीं।

अमित :

पर, किसी न किसी दिन तो हमें निर्णय लेना ही है।

सविता :

तुम्हारी बात ठीक है अमित, किन्तु मैंने अभी इस विषय पर सोचा ही नही है। (फिर बात को बदलकर) अच्छा बताओ ! तुम्हें यह मेरा फ्लैट कैसा लगा ?

अमित :

फ्लैट तो अच्छा है, किन्तु तुमने होस्टल क्यो छोड़ दिया ?

सविता :

होस्टल में मेरा दम घुटने लगा था। वहाँ का वातावरण पता नही मुझे ! कुछ दिनो से मन को कचोटने-सा लगा। फिर मन में एक बात यह भी घर कर बैठी कि मेरा अपना भी एक छोटा-सा सुन्दर घर हो जिसे मैं अपना कह सकूं। कल्पना में कुछ चित्र बनने लगा कि मेरा कोई एक ऐसा नीड़ हो जिसमे मैं अपने सपनो का ससार बसा सकूँ।

अमित :

किन्तु उस नीड़ मे बसने वाली सारिका ने अपना कोई शुक भी ढूढ लिया है क्या ? कौन भाग्यशाली है वह ? क्या इतना जानने का अधिकार मुझे दे सकोगी सविता ?

सविता :

लेकिन मेरे उस शुक का परिचय प्राप्त कर तुम्हें ईर्ष्या तो नही होगी न !

अमित :

(ठन्डी आह भर कर) क्यों मुझे ईर्ष्या क्यों होने लगी तुम्हारे शुक से। मैं तो उसके जीवन के मधुमय स्पन्दन के मीठे-मीठे गीत सुनूंगा।

सविता :

(वंकिम भाव भंगिमा और स्मित हास्य के साथ) तो देखो उस दर्पण मे जिसकी छवि तुम्हें दिखलाई दे रही है, वही मेरा मन-पारखी, मेरे सपनों का सौदागर है। उसी की प्रतीक्षा मे मेरी चिर-विहरणी आत्मा दिन-रात आकुल-व्याकुल रहती है। मुझे अपनी आत्मा की सम्पूर्ण कल्पना में यह विश्वास है

अमित कि वह एक दिन इस नीड़ में आकर वातावरण को संगीत के लघु लहरों से आप्लावित करेगा।

[अमित दर्पण में स्वयं की छवि देखकर सविता के काव्यात्मक विनोद से झेंप जाता है, तदनन्तर भाव-विह्वल होकर]

अमित :

ओह! सविता! मेरे प्राणों की स्पन्दन, मेरे जीवन की प्रेरणा।

[सविता की निश्छल प्रेमनिष्ठापूर्ण बात से अमित भावातिरेक से गद्-गद् हो जाता है। कुछ क्षणों के लिए वातावरण में मौन छा जाता है और दोनों एक दूसरे की आंखों में निर्निमेष देखने लगते हैं। मंच पर शनैः-शनैः प्रकाश की रेखायें धूमिल होती हुई अन्धकार में विलीन हो जाती हैं।]

[मंच पर पुनः प्रकाश होता है। एक सोफे पर सेठ धर्मदास, सदस्य-लोकसभा पसरकर बैठे हुए हैं। समीप ही टेलीफोन रखा हुआ है। एक दूसरे सोफे पर एक अफसरनुमा युवक बैठा हुआ है जो 'जन-क्रान्ति' समाचार-पत्र की सुखियों को गौर से पढ़ रहा होता है। सहसा उसकी दृष्टि एक न्यूज हैडिंग पर स्थिर हो जाती है। वह उस न्यूज हैडिंग को उच्च स्वर से पढ़ता है]

शहजात :

(न्यूज हैडिंग पढ़ता हुआ) सेठ धर्मदास के काले कारनामे। सिमेंट में पत्थर के चूरे की मिलावट। एम० पी०, अफसरों और ठेकेदारों की मिली भगत से जनता का क्रूरता पूर्ण शोषण एवं उत्पीड़न।

[एक सांस में पूरी न्यूज को पढ़कर प्रश्न वाचक दृष्टि से सेठ धर्मदास की ओर देखता है।]

सेठ धर्मदास :

देखा न आपने एस.डी.ओ. साहब! यह अखबार वाला तो सबको बेन-काब कर देगा। जनता में हमारी बदनामी करके, हमें कहीं का भी नहीं रहने देगा। यदि इसका मुँह बन्द नहीं किया तो। (बात को बीच में तोड़कर) अच्छा शहजात साहब! जनक्रान्ति का सम्पादक यह अभिमन्यु है कौन? आपको कुछ पता तो होगा।

शहजात :

हाँ, पता तो है। जानता हूँ मैं उसे।

[टेलीफोन की घण्टी बजती है। सेठ धर्मदास रिसीवर उठाकर बात सुनता है और चौंक पड़ता है।]

सेठ धर्मदास :

क्या कहा ? अब मजदूर फैक्ट्री से बाहर निकल आये है यानी कि हड़ताल कर दी है। उस गिरधारी नाम के मजदूर की मृत्यु की न्यायिक जाँच···· कहते है उसकी हत्या की गई है। क्या कहा निकाले हुए,मजदूरो को वापस लेने की माँग कर रहे है। हेलो-हेलो मैनेजर साहब आप घबरायें नही। अभी पुलिस भिजवाता हूँ। ये लातो के देवता बातो से यों नही मानेंगे। हलो, आप चिन्ता न करें। हाँ, अभी तुरन्त पुलिस (रिसीवर रखकर शहजात से) देख लिया न आपने। चीटी के पर उगने लगे हैं। अब इन लोगो में इतनी हिम्मत बढ़ गई है कि कहते हैं हमारे मजदूर नेता की हत्या की गई,-वह एक्सीडेंण्ट में नही मरा। शहजात साहब ! ऐसे अमन और शान्ति कैसे टिकेगी ? ये गुण्डे लोग तो ?

शहजात :

आप फिक्र न करें एम० पी० साहब। अभी मैं पुलिस फोर्स भेज कर सबको ठीक करवा दूगा। (टेलीफोन का रिसीवर उठाता है) हेलो—पुलिस स्टेशन। कौन एम० पी० साहब ? हाँ भाई देखना, मोदी सिमेंट फैक्टरी में मजदूरो ने हड़ताल कर दी। जरा इस मसले को ठीक ढंग से सम्हालो। हाँ अभी-तुरन्त ! हाँ-हाँ लाठी चार्ज, आवश्यकता पड़े तो गोली भी। (रिसीवर रखकर सेठ धर्मदास से मुस्कराता हुआ) इन सिरफिरों का बस यही एक इलाज है एम० पी० साहब। मेरे रहते हुए आप चिन्ता न करें।

धर्मदास :

बहुत-बहुत शुक्रिया शहजात साहब। मुख्य मन्त्री जी से कहकर और भी ऊँची पोस्ट पर आपका प्रमोशन करने को कहूँगा। हाँ, आप उस सम्पादक को जानते हैं ?

शहजात :

जानता तो हूँ एम० पी० साहब। कॉलेज में वह और मैं दोनो एक साथ

ही पढ़े हुए हैं। उसका वास्तविक नाम तो अमित है। अभिमन्यु उपनाम है। मेरा तो वह पक्का दोस्त था।

धर्मदास :

(आश्चर्य मिश्रित भाव के साथ-साथ घाघ दृष्टि से) अभिमन्यु आपका दोस्त है फिर भी आप के खिलाफ लिख कर, हम लोगो को बदनाम करके यह कौनसी दोस्ती निबाह रहा है ? क्या कुछ ब्लैकमेल करना चाहता है ? अरे आपके पास तो बहुत साधन है, किसी भी डिपार्टमेंट का एडवरटाइजमेण्ट दिला कर बेचारे की कुछ मदद कर दिया कीजिए न। मैं भी उसकी मदद कर दिया करूंगा।

शहजात :

लेकिन एम० पी० साहब ! वह कुछ और ही मिट्टी का बना हुआ है। उसका कैरियर बड़ा ब्रिलियन्ट रहा है, थ्रू आउट फर्स्ट क्लास फर्स्ट। यदि वह चाहता तो आज किसी ऊँचे औहदे पर होता, पर उसका तो दिमाग कुछ और ढंग का है। अजीब अहमक है। अपने को गरीबों का मसीहा ''''''?

[टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है। रिसीवर उठाकर]

सेठ धर्मदास :

हेलो, कौन ? प० विष्णु प्रसादजी ! सम्पादक जुबली। हाँ-हाँ मैंने लोक सभा में श्रमिकों के कल्याण की आवाज उठाई थी। बेचारे रात-दिन कमर तोड़ कठिन मेहनत करने पर भी ' हाँ-हाँ-बोनस बढ़ाने, काम के घण्टे कम करने आदि का विधेयक मैंने ही रखा था। क्या कहा ? जी मेरे फोटो छापने के लिए ब्लाक बनायेंगे (हँसकर) रहने भी दीजिए—अच्छा-अच्छा भेज दूंगा। सनातन धर्म-शाला के लिए डोनेशन—छात्रों के लिए होस्टल '''ठीक है ठीक है। अच्छा नमस्ते।

सेठ धर्मदास :

(शहजात से) सब अखबार वाले अपने ही पक्ष में लिखते है किन्तु यह 'जन क्रान्ति' ही भ्रान्ति फैला रहा है। (टेबुल पर रखी विह्स्की की ओर संकेत करके) अरे भाई लो न ! अभी से क्या हाथ खींच लिया। (प्याले में खुद वाइन उँडेलता है।)

शहजात :

बस एम० पी० साहब, बस कीजिए। बहुत ले चुका। आप भी तो लीजिए। आपने बिल्कुल ही।

सेठ धर्मदास :

भाई। मैं तो शाकाहारी हूँ, काजू ले रहा हूँ, वाइन तो कभी-कभी स्वास्थ्य-वृद्धि के लिए दवा के तौर पर ही ले लेता हूँ।

[टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है। सेठ धर्मदास रिसीवर उठाकर]

सेठ धर्मदास :

हेलो ! कौन हरवंश जी। बोलिए ठेकेदार साहब क्या आज्ञा है ? इम्पोर्ट लाइसेंस ·····आप बेफिक्र रहिये। अरे डेढ लाख रुपया इलैक्शन फण्ड के लिए ? भाई धन्यवाद। आजकल चुनाव खर्च भी बहुत बढ गया है। पार्टी आप लोगों के बलबूते पर·······हाँ लाइसेन्स परमिट-ठीक-ठीक। क्या ? डाइरैक्टर्स आफ कामर्स एशोसियेशन कान्फ्रेंस। आऊँगा भाई आऊँगा। तुम्हारी आज्ञा जो ठहरी। अच्छा नमस्ते।

सेठ धर्मदास .

(रिसीवर रखता हुआ शहजात से) भाई शहजात मियाँ। ये ठेकेदार भी पूरा आफत का पुतला है। स्साला बड़ा काँईया है।

[शहजात मुस्कराता है। इससे पहले कि वह कुछ बोले, टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है।]

सेठ धर्मदास :

(टेलीफोन का रिसीवर उठा कर कुछ कर्कश आवाज में) हेलो, कौन हैं आप ? ओह। मिस मालती ! (स्वर में माधुर्य घोलता हुआ) जी, क्षमा कीजियेगा। कुछ परेशानी में था। महिला समाज कल्याण केन्द्र, आज रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम· मुख्य अतिथि ! अजी क्या कीजियेगा, किसी और को ······। (अचानक चपरासी का प्रवेश)

चपरासी :

साहब बाहर ·····(सेठ धर्मदास—चपरासी पर बिगड़कर फोन पर ही)

अरे ठहर कम्बख्त, इडियेट ! ''' जी, जी क्षमा कीजिए। यह तो अपने चपरासी से, ना, आप नाराज ना हो—हाँ आऊँगा-जरूर-श्योर, हुक्म कीजिए ना सरकार-कौन ? वीणा ! स्मार्ट'''स्वीट''' स्टेनो टाइपिस्ट के लिए। इसमें ओबलाइज की क्या बात कह रही है ? उल्टे आप हमें ओबलाइज कर रही हैं। हमें अवसर दे रही हैं बेकारी दूर करने का, जन-सेवा का। जी धन्यवाद।

[टेलीफोन का रिसीवर रखकर चपरासी को आग्नेय दृष्टि से देखते हुए]

सेठ धर्मदास :

हाँ—कहो क्या बात है ?

चपरासी :

जी, एक लड़की आप से मिलना चाहती है।

सेठ धर्मदास :

क्यों क्या काम है मुझसे (फिर कुछ याद करता-सा) अरे हाँ—अच्छा भेज दो उसे अन्दर।

[लगभग बीस वर्षीय एक नवयुवती का प्रवेश। क्रीम कलर की साड़ी, बॉब कट हेयर। लिपस्टिक-पाउडर। पूरा मेकअप। हाथ में वैनिटी बैग झूलता हुआ,—सेठ धर्मदास से नमस्ते करती है। समीप बैठे शहजात की ओर उसका ध्यान नहीं जाता।]

सेठ धर्मदास :

तो आपका ही नाम वीणा है। बैठियेगा। मिस मालती ने आपके लिए फोन किया था। वैसे स्टेनो टाइपिस्ट की हमारे यहाँ जगह तो नहीं, किन्तु जब मिस मालती से आपकी तारीफ सुनी तो'''।

मिस वीणा :

(कुछ संकोच के साथ) जी, बड़ी मेहरबानी है आपकी, जगह न होते हुए भी आपने !

सेठ धर्मदास :

नहीं, मेहरबानी की कोई बात नहीं। प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देना

तो····मिस मालती से ही सुना—आप अच्छी आर्टिस्ट भी हैं। आज रात्रि को 'कल्चरल प्रोग्राम' में आप भी तो कुछ आइटम दे रही हैं न।

वीणा :

(संकोच मिश्रित मुस्कान के साथ) जी, हाँ। आप अवश्य आइयेगा।

सेठ धर्मदास :

(शहजात की ओर संकेत करके) मिस वीणा! इन्हें आप जानती हैं। यह हैं हमारे जिले के एस. डी. ओ. साहब!

[वीणा शहजात को देखकर चौंक-सी पड़ती है, किन्तु निश्चय नहीं कर पाती है कि वह शहजात ही है]

वीणा :

(शहजात की ओर उन्मुख होकर) जी, नमस्ते! क्षमा कीजिए, लगता है मैंने पहले कहीं आपको देखा है।

शहजात :

(मुस्कराकर) मैंने भी आपको कहीं देखा है, पर पता नहीं कहाँ?

सेठ धर्मदास :

(वीणा से) अच्छा मिस वीणा। आप मेरे पी. ए. से अपना काम अच्छी तरह समझ लें।

(चपरासी से) रामदीन, मिस वीणा को पी. ए. साहब से मिलवा दो।

[चपरासी के साथ वीणा का प्रस्थान]

सेठ धर्मदास :

(शहजात से) हाँ, तो शहजात साहब, जनक्रान्ति के उस अड़ियल टट्टू का कुछ बन्दोबस्त कीजियेगा, वरना जनता में वह हमारा इमेज बिगाड़ कर रख देगा।

शहजात :

(रहस्यमयी मुद्रा में) आप फिक्र न करें एम. पी. साहब। शेर को अपनी माँद में ही कैद करने का मसाला जुट गया है। जानते हैं यह मिस वीणा कौन है?

सेठ धर्मदास :

(जिज्ञासा की मुद्रा में) नहीं तो।

शहजात :

अरे साहब यह उस जनक्रान्ति के सम्पादक अभिमन्यु की ही तो बहिन है जो हम सब के लिए सर-दर्द बना हुआ है।

सेठ धर्मदास :

(प्रसन्नता से उछल कर)तब-तो, तब-तो, शहजात साहब मामला काबू के बाहर नहीं हैं। इस बात पर तो एक घूंट और हो जाय।

[दोनों का अट्टहास। धीरे-धीरे मंच अन्धकार में डूब जाता है।]

[मंच पर प्रकाश की धूमिल धाराएँ विकीर्ण होती हैं। एक युवक का हाथ थामे वीणा मंच पर प्रवेश करती है। प्रकाश उन दोनों पर केन्द्रित हो जाता है। युवक के बाल बढ़े हुए हैं, बेलबॉटमनुमा पेन्ट में धँसी सफेद शर्ट। आँखों पर गोगल चश्मा। वीणा भी बेलबॉटम पर शर्ट पहिने हुए है। बॉब कट हेयर स्टाइल, आँखों पर गोगल]

वीणा :

(प्रेम-विह्वल जनित भावुकता से) हाय मनीष! तुम कितने अच्छे हो!

मनीष :

डार्लिंग? माई स्वीट हार्ट। इट इज माई लक टू.....।

वीणा :

(मनीष का वाक्य बीच में काटती हुई) ओह! नो, नो। इट इज माई लक। सिर्फ मेरा लक है कि तुम जैसा साथी मुझे मिला। लेकिन एक बात कहूँ मनीष।

(मनीष प्रश्न भरी दृष्टि से वीणा को देखता है।)

बुरा तो नहीं मानोगे!

मनीष :

अरे डार्लिंग; तुम कहो न। तुम्हारी बात का बुरा? भई, वाह " तुम भी कैसी बात कर रही हो? एक दम नोनसेंस।

वीणा :

कभी-कभी ऐसा लगता है…!

मनीप :

कैसा लगता है ?

वीणा :

अब मैं क्या बताऊँ तुम्हे ? मन मे डर लगता है।

मनीप :

किस बात का ?

वीणा :

(कुछ झिझकती हुई-सी) कि कहीं तुम !

मनीप

कहो-कहो वीणा ! कहते-कहते रुक क्यो गई ?

वीणा :

मुझे छोड तो नही दोगे ?

मनीप :

ओह ! वीणा तुम भी कैसी बच्चो जैसी बात करती हो। क्या मुझे इतना कायर समझती हो ?

वीणा

नही मनीप, पर मन नही मानता। दिन-रात मुझे यही आशंका घेरे रहती है। कही तुमने मुझे छोड़ दिया तो मैं कही की भी नही रहूँगी, कहीं की नही रहूँगी। (वीणा विचलित हो, मनीप के कन्धे पर सिर रख देती है और उसकी आँखों के कोर गीले हो जाते हैं।)

मनीप

(रूमाल से वीणा के अश्रु पोंछते हुए) यह क्या पागलपन है वीणा, तुम एक एडल्ट गर्ल होकर कैसी पागलपन की बातें कर रही हो ? अरी मैं अमेरिका से जल्दी ही लौट आऊँगा। लास एंजेल्स से तुम्हें पत्र लिखूँगा। जवाब तो दोगी न !

वीणा .

लेकिन तुम अमेरिका से नही लौटे तो मेरा क्या होगा मनीप ?

मनीप .

अरी, ऐसा कैसे हो सकता है डालिंग । यदि अमेरिका से नही भी लौटा तो फिर तुम्हे ही वहाँ बुला लूंगा । तुम कतई चिन्ता मत करो ! अच्छा चलता हूँ—गुडबाई । (मनीप रूमाल हिलाता सरपट चाल से चला जाता है । वीणा बॉय कह कर हाथ हिलाती है और जाते हुए मनीप को ताकती रहती है । फिर कुछ क्षणों के लिए विचार मुद्रा में खड़ी रहती है । एक ओर से हाथ में पुस्तक लिए सविता का प्रवेश । प्रकाश की क्षीण रेखाएँ सविता पर पड़ती हैं । जब सविता वीणा के समीप पहुंच जाती है तो प्रकाश तेज होकर उन दोनों पर केन्द्रित हो जाता है ।)

सविता :

अरे वीणा ! तुम यहाँ अकेली क्या सोच रही हो ?

वीणा :

(चौंक कर) ओह ! सविता दीदी । आओ । कहो कैसी हो ?

सविता :

पहले तुम बताओ । तुम्हारे क्या हाल है ? आज बहुत अर्से बाद मिली हो ।

वीणा

(अपराध भाव से कुछ-झेंपती-सी) ठीक ही है सविता दीदी ।

सविता :

लेकिन तुम्हारा यह उदास मुँह, तुम्हारी आँखें तो कुछ और ही कह रही हैं ।

वीणा :

(भारी मन से) मनीप अमेरिका जा रहा है ।

सविता :

ओह ! समझी । तो क्या तुम नही जा रही हो उसके साथ ?

वीणा :

कहता है बाद मे बुला लूंगा ।

सविता :

फिर तुम ! मेरा मतलब तुमने क्या सोचा है अपने बारे में ?

वीणा :

किस बात को लेकर ?

सविता :

(कुछ झिझक कर बात को बदलती हुई) यही तुम्हारे रहने-सहने के बारे में ?

वीणा :

क्यों महिला-समाज कल्याण केन्द्र के होस्टल में रह तो रही हूं न मालती दीदी के पास । मालती दीदी बड़ी अच्छी हैं । मुझसे बहुत स्नेह रखती हैं, सविता दीदी !

सविता :

अच्छा !

वीणा :

हां, उन्होंने मुझे एम. पी. साहब के यहां स्टेनो टाइपिस्ट का काम भी दिलवा दिया है ।

सविता :

अरी, तू उस एम. पी. के यहां स्टेनो टाइपिस्ट का काम करेगी जो.... '

वीणा

क्यों ! क्या अच्छे व्यक्ति नहीं हैं एम. पी. साहब । भई; वह तो इस क्षेत्र के बड़े आदमी हैं ।

सविता

लेकिन वीणा ? सोचती हूँ.........

वीणा :

क्या सोचती हो ?

सविता

कि शायद तुमने यह अच्छा काम नहीं किया ।

वीणा .

वो कैसे ?

सविता :

वह तुम्हे माध्यम बना सकता है।

वीणा :

मैं समझी नही।

सविता :

जानती हो, अमित की शोषण, उत्पीडन एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई चल रही है। उसने जनक्रान्ति मे उनके काले कारनामें छाप कर, लोक-सेवक का मुखोटा पहिने हुए गरीब जनता का क्रूरता से शोषण और उत्पीड़न करने वाले उन भ्रष्टाचारियों को बेनकाब कर डाला है।

[वीणा चुप रहती है]

अमित का मुँह बन्द करने के लिए वे तुम्हें माध्यम बना सकते है, तुम्हारी स्थिति का लाभ उठाकर वे ब्लैकमेल करने से भी बाज नही आयेंगे।

वीणा :

(सोच में पड़कर-अनिश्चय की स्थिति में) तब फिर।

सविता :

देख वीणा ! गहराई से सोच तू।

(वीणा प्रश्न वाचक मुद्रा मे सविता के मुँह को देखती है) तू कहा मान, अब भी घर लौट चल।

वीणा :

(विचलित होकर) एक बार घर से निकलकर अब किस मुँह से !

सविता :

तू माँ की ममता और भाई के प्यार को नही जानती। वे तुझे क्षमा कर देंगे। तुझे घर लौट आई जान कर वे बड़े प्रसन्न होंगे।

वीणा :

(अनिर्णय की मनःस्थिति में) पर मनीष !

सविता :

तो तू अब भी सोचती है कि मनीष अमेरीका से लौटकर तेरे पास आयेगा और !

वीणा :

और ?

सविता :

तुझे अपनी ब्याहता बहू बनाकर अमरीका ले जायगा।

वीणा :

(सविता के इस सीधे प्रश्न से तिलमिलाकर) तो तुम्हें संशय है सविता दीदी ?

सविता :

अब तू ही पूछ अपने मन से। मनीष जिस सभ्यता की 'प्रॉडक्ट' है, नारी का शरीर जिसके लिए सिर्फ खिलौना मात्र है। इसी से ……।

वीणा :

(संशय, आशंका की मनः स्थिति से विचलित होकर भर्राये स्वर में) सविता दीदी ! मेरा मन भी ! लाख समझाने की कोशिश करने पर भी मुझे भी यही डॉउट है ?

सविता :

देख वीणा ! तुमने भावुक प्रेम से उद्वेलित होकर यह जो घर से भाग निकलने का ‥

(वीणा एक दम निढाल होकर जमीन पर बैठ जाती है।) फिर वह कितना अविवेक पूर्ण कदम था।

(वीणा सुबक-सुबक कर रोने लगती है। वीणा को यों रोते देखकर सविता का मन भीग उठता है) अरी यह क्या हुआ तुझको। (वीणा की बाँह पकड़कर खड़ी करती हुई) चल उठ, खडी हो। लो अब घर चलें।

[दोनों का प्रस्थान। मंच पर अँधेरा हो जाता है]

[मंच पर पुन प्रकाश की धाराएँ गतिशील हो जाती हैं। प्रकाश-बिंब मच के बीच में केन्द्रित होता है, जहाँ मेज पर बैठा हुआ एक व्यक्ति दिखलाई पड़ता है। वह सफेद खादी का कुर्ता-पाजामा पहिने हुए है तथा कुर्ते पर जाकेट पहिने है। आँखों पर चश्मा लगा है। मेज के समीप रैक में कुछ अखबार, फाइलें रखी हुई हैं। एक तिकोने

स्टूल पर फोन रखा हुआ है। पीठ पीछे दीवार के सेन्टर में 'स्वामी विवेकानन्द' की एवं अलग-बगल में सुकरात, ईशा, बुद्ध, महात्मा गांधी के चित्र लगे हुए हैं। मेज के इधर-उधर व सामने तीन-चार कुर्सियाँ रखी हुई हैं। युवक कुछ लिखने में व्यस्त दिखलाई पड़ता है। मंच पर सूट-बूट धारी एक अन्य युवक की मुख-मुद्रा से अफसरों का रुतबा झलकता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है]

अमित :

(लिखना छोड़ कर खड़ा होते हुए) ओह ! शहजात भाई तुम। आओ बैठो। कहो आज अचानक इस गरीब खाने पर आप जैसे व्यस्त व्यक्ति को आने की फ़ुर्सत कैसे मिल गई ?

शहजात :

(कुर्सी पर बैठता हुआ कुछ, व्यंग भाव से) जब देखा कि हमारा एक दोस्त 'जनक्रांति' का सम्पादक बनकर हमारे खिलाफ ही अपनी कलम के कारनामें दिखला रहा है, तो सोचा, एक बार मिल लिया जाय।

अमित :

(उसी व्यग्य भाव से) ओह ! अब समझा ! मैंने भी सोचा यह एस.डी.ओ. साहब आज यहां कैसे ? तो शहजात, मैं यह समझूँ कि मुझसे मिलने मेरा एक मित्र नही, वरन् भ्रष्ट प्रशासन का प्रतिनिधि एक अधिकारी मेरे पास आया है।

शहजात :

(बात को बिगड़ती देखकर उसे बनाने का प्रयत्न करता-सा) नही अमित, नही मेरे दोस्त ! ऐसी बात नही है। यह जो तुम समझ रहे हो, एक दम गलत है। एक एस. डी. ओ. को तुम्हारे यहाँ चलकर आने की आवश्यकता नही थी। मैं तो अपने एक पुराने दोस्त से मिलने चला आया हूँ। साथ ही सोचा यदि कुछ गलतफहमी हो तो उसे दूर करली जाय।

अमित :

देखो शहजात ! एक बात स्पष्ट समझलो ! यह तो तुम मेरे मित्र हो, किन्तु कोई अन्य व्यक्ति भी हो तो उससे मेरी कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं

है। व्यक्तिश: मेरा किसी से वैर-भाव नहीं है, किन्तु ……।

शहजात :

किन्तु !

अमित :

एक निर्भय सम्पादक के नाते, एक निष्पक्ष प्रेस की गरिमा रखते हुए मुझे उस व्यवस्था का जिसके क्रूरतन्त्र से जनसाधारण का, आम आदमी का शोषण, उत्पीड़न हो रहा है और भ्रष्टाचार का दानव जिस व्यवस्था का प्रहरी है, उसके विरुद्ध आवाज उठा कर जनजागृति पैदा करना मेरा पावन कर्त्तव्य है। एक स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र प्रेस की यही एक गरिमा है।

शहजात :

निस्सन्देह यह तुम्हारा एक ऊँचा आदर्श है अमित, किन्तु बुरा नहीं मानना, जीवन केवल आदर्शों के सहारे ही नहीं जिया जाता। यथार्थ की चोट कुछ और ही होती है।

अमित :

(मुस्कराकर) यथार्थ के भीषण प्रहार सह-सह कर अब मेरा तन-मन पक चुका है शहजात ! तुम इसकी चिन्ता न करो।

शहजात :

लेकिन अमित, इस प्रकार जीवन से दुश्मनी निकालने के बजाय तो तुम इसका मीठा स्वाद चख सकते हो, जीवन का आनन्द उठा सकते हो। तुम्हारे पास प्रतिभा की भी कमी नहीं है। तुम यदि चाहो, मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ। एक दोस्त का फर्ज निबाह सकता हूँ।

अमित :

वह कैसे ?

शहजात :

एम. पी. साहब, मुख्य मन्त्री जी से कहकर तुम्हें जन-सम्पर्क अधिकारी बना सकते हैं। कुछ अर्से बाद डाइरेक्टर ऑफ पब्लिक रिलेशन भी बन सकते हो। और ……।

अमित :

और ?

शहजात :

यदि तुम इसी को पसन्द करते हो तो तुम्हारे पत्र के लिए सरकार से 'ग्रांट इन ऐड, दिलवा सकते है, चन्दा एकत्रित करवा सकते हैं, जिससे तुम एक अच्छा भवन बनवा सकते हो, टेली प्रिन्टर लगवा सकते हो, पर !

अमित :

पर ?

शहजात :

शर्त यही है कि तब तुम्हें विरोध की भावना छोड़कर उन्हें सपोर्ट करना पड़ेगा।

अमित :

[टेलीफोन की घण्टी बज उठती है]

(खिन्न मन से रिसीवर उठाकर) हेलो ! कौन हरवंश ? हाँ, मैं अमित ही बोल रहा हूँ। हाँ, वह एडवरटाइजमेण्ट की धनराशि का ड्राफ्ट अग्रिम रूप में मिल गया है, किन्तु खेद है, मैं उसे लौटा रहा हूँ। बुरा न मानना हरवंश, मैं मजबूर हूँ ! हाँ, मित्रता के मूल्य पर मैं जनता के साथ धोखा नहीं कर सकता। हाँ ""हाँ ऐसे जनक्रान्ति का मुँह बन्द नहीं होने दूँगा। (क्रुद्ध हो रिसीवर रख देता है।)

अमित :

(अपनी उत्तेजना को दबाने का प्रयत्न करता हुआ) तब यह चुके तुम शहजात !

शहजात :

हाँ भाई, एक मित्र की भलाई के लिए मुझे जो कुछ कहना चाहिए था, वह चुका। सोचलो ! अब यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि इस जिन्दगी को काँटों से भुजसते हो या फूलों की सेज पर सुलाते हो। दोनों ही रास्ते तुम्हारे लिए खुले हुए हैं। एक रास्ता दोजख से भी अधिक भयानक यातनाओं का है, दूसरा बहिश्त के सुख से अधिक वैभव और आनन्द का ?

[अमित उत्तेजित होकर खड़ा हो जाता है, फिर एक तस्वीर की ओर संकेत करके शहजात से]

अमित :

देखते हो, यह किसका चित्र है ? (फिर प्रश्न का स्वयं ही उत्तर देता हुआ) यह है सुकरात ! सच बात कहने के लिए इसे जहर का प्याला पीना पड़ा था। यह दूसरा चित्र ईसा का—इसे क्रॉस पर लटका दिया गया था और तीसरा चित्र तो तुम जानते ही हो। मानवता के मसीहा इस गान्धी को गोली खानी पड़ी। (दोनों हाथ जोड़कर शहजात को नमस्ते करता हुआ) अच्छा मैं तुम्हारा मूल्यवान् समय अधिक लेना नहीं चाहता। एक उपजिलाधीश का समय बड़ा कीमती होता है।

[शहजात अमित के इस व्यंग्यपूर्ण व्यवहार से हतप्रभ रह जाता है, तदनन्तर अमित के नमस्कार का उत्तर देकर चला जाता है। नेपथ्य में गाड़ी का हॉर्न सुनाई पड़ता है और गाड़ी स्टार्ट होने की ध्वनि होती है। अमित कुछ क्षणों तक सोचता हुआ दिखाई पड़ता है। तदनन्तर टेलीफोन की घण्टी बज उठती है।]

अमित :

(रिसीवर उठाकर) हेलो ! कौन ? क्या कहा ? खिलाफ लिखना बन्द नहीं करूँगा तो दफ्तर में आग लगा दोगे... हत्या कर दोगे... हेलो... हेलो ! कौन हो तुम ? हेलो—कहाँ से बोल रहे हो ? हेलो... हेलो !

(रिसीवर रखता हुआ) व्यंग्य पूर्ण मुस्कान से हँस पड़ता है—हुंऽ हुं-हुंऽऽ ! (दर्शकों की ओर देखता हुआ) जब पतित लोग सत्य का सामना नहीं कर पाते हैं तब मानवता कलंकित करने वाली कायरतापूर्ण हरकतों पर उतर आते हैं। आग लगाने की, हत्या करने की धमकियाँ देते हैं। लेकिन असत्य के उन पुजारियों को शायद यह पता नहीं है कि जीवन मृत्यु से कब हारा है ? आखिर सत्य की विजय होती है।

[शनैः-शनैः मंच पर अन्धकार हो जाता है।]

अंक ३

[एक कमरे में सेन्टर टेबुल रखी हुई है। टेबुल के इधर-उधर दो-तीन कुर्सियाँ रखी हुई हैं। सेन्टर टेबुल पर अखबार रखा प्रतीत होता है। बाँयीं ओर टेबुल-कार्नर पर एक टेबुल-फेन चल रहा है। एक कुर्सी की पीठ का सहारा लिए क्लान्त मुद्रा में अमित दिखलाई पड़ रहा है। उसके सिर पर पट्टी बँधी हुई है तथा उस पर रक्त का एक धब्बा दृष्टिगोचर हो रहा है। अमित के हाथ में अखबार है जिसे वह उड़ती नजर से पढ़ रहा प्रतीत होता है। कुछ क्षण पश्चात ही एक ट्रे में चाय लिए हुए सविता प्रवेश करती है और चाय की ट्रे को सेन्टर टेबुल पर रखकर अमित के समीप ही एक अन्य कुर्सी पर बैठ जाती है। वह अमित के हाथ से बड़ी आहिस्ता से अखबार लेकर एक ओर रख देती है।]

सविता :

(चाय का प्याला अमित को देती हुई) लो अमित ! पहले यह चाय पी लो।

[सविता के हाथ से अमित चाय का प्याला ले लेता है और कुछ क्षण सविता के मुँह को निर्निमेष दृष्टि से देखता रहता है। तदनन्तर—]

अमित :

(थके स्वर में) सविता, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं जानता था, यह सब होगा। किन्तु इतना जल्दी यह सब हो जायगा, ऐसी आशा नहीं थी।

सविता :

जानते थे फिर भी।

अमित :

टेलीफोन पर एक अज्ञात व्यक्ति ने धमकी दी थी, लेकिन तब उस आदमी की मैंने परवाह नही की। परवाह करने से होता भी क्या ?

सविता :

पुलिस में रिपोर्ट कर देते, सेफ्टी की दृष्टि से ही।

अमित :

की तो थी, किन्तु जब रक्षक ही भक्षक बन जाय ! पुलिस पहुँची तब तक 'जनक्रान्ति' का दफ्तर आग की लपटों में स्वाहा हो चुका था। मुझ पर जालिमों ने कातिलाना हमला किया, किन्तु यह तो जीवन शेष था, नही तो ?

[सविता की आँखें नम हो जाती हैं किन्तु अपनी साड़ी के आँचल से तुरन्त पोछ लेती है।]

सविता :

(प्लेट में रखी स्लाइस देती हुई) लो, अब इसे खालो। छोड़ो उस बात को।

अमित .

(आह भर कर) यह सब कुछ तो अब छूट ही चुका है सविता, किन्तु स्वतन्त्र भारत मे प्रेस की स्वतन्त्रता का इस सीमा तक हनन। (आवेश में आकर) वे मेरे इस शरीर को खत्म कर सकते है सविता किन्तु मेरी आत्मा की आवाज को नही। वे सत्य का गला घोट देना चाहते है, किन्तु सत्य कभी नही मरता। वे लाख सिर पटक लें सविता किन्तु अन्याय, उत्पीड़न, शोषण एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध मेरी लड़ाई अन्त तक चलती रहेगी।

सविता :

लेकिन कभी-कभी सोचती हूँ अमित कि······(कहती-कहती रुक जाती है।)

अमित :

कि ?

सविता :

हम एक ऐसी अन्धी सुरंग मे धकेल दिये गये हैं, जहाँ से निकलने का कोई रास्ता दृष्टिगोचर नही होता।

अमित :

तुम्हारा कथन ठीक है, किन्तु अन्धकार और प्रकाश की लड़ाई तो युग-युग से चलती आयी है।

सविता :

और युग-युग तक चलती रहेगी। पर अन्तत· जीत प्रकाश की ही होगी।

अमित :

तमसो मा ज्योतिर्गमय'—अन्धकार से प्रकाश की ओर अभियान, यही तो भारतीय सस्कृति की उदात्त उद्घोषणा है। (कुछ रुककर) मेरे अन्तर्मन मे प्रकाश की एक नयी किरण ने जन्म लिया है सविता।

[सविता अमित की इस नयी उल्लसित मुद्रा को बड़े ध्यान से देखती हुई चुप रहती है।]

मैं सोचता हू सविता कि जब तक अज्ञान रूपी अन्धकार को ज्ञान के आलोक से नष्ट नही किया जायगा तब तक ?

सविता :

तब तक ?

अमित :

तब तक यह देश कभी प्रगति नही कर सकता। आज हमारे देश की बहुत बड़ी जनसंख्या निरक्षर एवं अशिक्षित है। आम जन-समाज अज्ञान के गहन अन्धकार में विमूढ़, आत्म-सन्तोषजनित आलस्य मे डूबा हुआ तथा अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के प्रति उदासीन है। अन्धविश्वासों की शृंखला मे जकड़ी कर्म-चेतना से शून्य इस भाग्यवादी जनता को जब तक व्यापक लोक-शिक्षा के द्वारा जागृत नही किया जायेगा, तब तक अपने प्रति हो रहे अन्याय का प्रतिकार करने की क्षमता वह नही जुटा पायेगी। अपनी मूढ़ता एवं अज्ञान के कारण वह शोषण-तन्त्र की स्वयं ही शिकार बनती रहेगी।

सविता :

तुम्हारा यह कहना तो ठीक है किन्तु उपाय ?

अमित

मैंने निश्चय किया है सविता कि प्रौढ़-शिक्षा का कार्य प्रारम्भ कर मैं लोगों को साक्षर बनाने के साथ-साथ लोक-शिक्षण द्वारा उनमें नयी चेतना जागृत करूँगा तथा आज के दिग्भ्रान्त युवा-आक्रोश को सही दिशा देकर प्रतिगामी एवं प्रतिक्रियावादी शक्तियों से निरन्तर संघर्ष जारी रखूंगा। अपने तथाकथित अभिजात-वर्गीय समाज से उपेक्षित उस आदीवासी बस्ती में जाकर आज ही से प्रौढ़-शिक्षा का कार्य प्रारम्भ करने जा रहा हूं।

सविता :

तुम्हारा निश्चय तो नि.सन्देह पवित्र है अमित, किन्तु तुम पहले पूर्ण स्वस्थ हो लो। अभी तुम बहुत कमजोर हो। घाव भी पूरे ठीक नहीं हुए है। यह काम तो जिन्दगी भर का है।

अमित :

अब तो मैं ठीक हो चला हू सविता, फिर मैं अपनी अन्तरात्मा की पुकार पर जब कोई नया काम हाथ में लेता हू तो मुझ में एक नई ताजगी, एक नई शक्ति उत्पन्न होती है तथा नया उल्लास मिलता है।

सविता :

इस दिशा में मैंने भी कुछ सोचा है, अमित।

(अमित सविता के मुख की रेखाओं को पढ़ता हुआ-सा चुप रहता है) मैं बच्चों को पढ़ाने का कार्य प्रारम्भ करूँगी तथा पददलित और पिछड़ी जाति की महिलाओं में लोक-शिक्षण के द्वारा जागृति उत्पन्न करूँगी। मैं सोचती हूं अमित कि बच्चे यदि देश के भविष्य की बुनियाद हैं तो नारी उसकी शक्ति।

अमित :

लेकिन तुम तो समाज-कल्याण विभाग में सर्विस कर रही हो। उसका क्या होगा ?

सविता :

मैंने उस सर्विस से मुक्त होने के लिए त्यागपत्र दे दिया है।

अमित :

लेकिन इससे पूर्व तो इस सम्बन्ध मे तुमने कुछ बताया नही ।

सविता :

सोच तो बहुत दिनों से रही थी, किन्तु कुछ निश्चित नही कर पा रही थी। वैसे भी हमारी डायरेक्टर मिस मालती का व्यवहार मेरे प्रति बहुत कटुतापूर्ण हो चला था। तुम्हे लेकर किसी न किसी बहाने, वह प्राय- नित्य ही मुझे अपमानित करने लगी थी ।

अमित :

मुझे लेकर तुम्हे ?

सविता :

वह सेठ धर्मदास को प्रसन्न करना चाहती थी, इसलिए नित्य मुझसे आग्रह करती थी कि तुम्हे समझाकर मै सही रास्ते पर लाऊं और तुम उन लोगो के विरुद्ध 'जन-क्रान्ति' में कुछ भी प्रकाशित नही करो। फिर वहां का वातावरण भी बहुत दूषित हो चला था। ऐसे वातावरण मे मेरा तो दम ही घुट जाता।

अमित :

खैर! दूषित वातावरण से मुक्ति की साँस लेकर यह तो तुमने अच्छा किया सविता, लेकिन एक दूसरा पक्ष भी है जो उपेक्षणीय नही है।

सविता :

मैं समझ रही हूँ अमित कि तुम क्या कहना चाह रहे हो। मैने उस पक्ष पर भी विचार किया है। अपनी आजीविका का एक सम्मानपूर्ण साधन भी मैने सोच लिया है।

अमित :

(कुतूहल और उतावलेपन की मुद्रा मे) वह क्या ?

सविता :

हम एक क्राफ्ट-सेन्टर शुरू करेंगे यानी कि उद्योग-कला-केन्द्र का सचालन करेंगे। इससे समाज मे आज की पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित परोपजीवी मनोवृत्ति के स्थान पर श्रमनिष्ठा मे विश्वास रखने की मनोवृत्ति को बल

मिलेगा। स्वावलम्बी समाज-रचना की दिशा में हमारा यह एक छोटा-सा प्रयोग भी ''!

अमित :

(उल्लसित होकर) तुम्हारा यह प्रयोग निःसन्देह आज के शिक्षित बेरोजगारों को एक नयी दिशा देगा। उनमें आत्मविश्वास जागृत करेगा। (भाव-विह्वल होकर) ओह ! सविता, तभी तो नारी को सृजन-शक्ति की अधिष्ठात्री देवी माना गया है। तुमने अपनी विलक्षण सूझ-बूझ से मेरे मन के बोझ को दूर कर दिया।

सविता :

[अमित से अपनी प्रशंसा सुनकर सलज्ज भाव से संकुचित होकर] किन्तु अमित मैं तो तुम्हारी अनुगामिनी हूँ। तुम्हारे पद-चिह्नों पर चलने वाली। तुम्हारे से ही प्रेरणा प्राप्त कर''''''''।

अमित :

नहीं सविता ! ऐसा न कहो। हम एक ही पथ पर चलने वाले सहयात्री हैं। आशा-निराशा की घड़ियों में एक दूसरे को सम्हाल कर जीवन की इस तीर्थयात्रा पर निरन्तर चलते रहना ही हमारी नियति है।

[वीणा का प्रवेश। वह अपराध-भावना से झिझक कर खड़ी रह जाती है।]

अमित :

[वीणा को देखकर आश्चर्य-मिश्रित उल्लास के साथ] अरी वीणा तुम ! कब आई ?

वीणा

[विचलित होकर भर्राये स्वर में] मुझे माफ कर दो भैया ! मैंने बहुत गलती की। [सुबक-सुबक कर रो पड़ती है।]

अमित :

(वीणा की पीठ पर स्नेह से हाथ फेरता हुआ) अब भूल जाओ उस बात को। समझ लो कि वह एक दुःस्वप्न था।

सविता:

अमित ठीक कहता है वीणा। अतीत की उस कटु स्मृति मे अपने को यों घायल करना ......। मैंने कितना समझाया है तुम्हें !

वीणा :

(बिलखती हुई) पर मुझे क्या पता था कि वह इस प्रकार धोखा देगा।

सविता :

(अमित से) इसको तो अन्त तक यही विश्वास रहा अमित कि मनीष अमेरिका से वापस आकर......और वह वापस लौट तो आया, किन्तु यह विश्वास नही था कि वह अमेरिकन पत्नी लेकर लौटेगा।

अमित ·

(उद्विग्न होकर आवेश से) मैं उस मनीष के बच्चे को पहले से ही जानता था कि वह एक अव्वल दर्जे का ? पर मुझे क्या पता था। खैर, अब इस टॉपिक को यही छोड़ो।

(वीणा से स्नेहपूर्वक) हाँ वीणा ! बस तुम यही समझ लो कि तुमने एक बुरा स्वप्न देखा था। समझी न। जब कोई भूल करके अपनी गलती सुधार ले तो वह भूला नहीं कहाता है।

वीणा :

(विह्वल होकर भर्राये स्वर में) भैया

[वीणा पुनः सुबक पड़ती है और अपना मुँह अमित के कन्धे से छिपा लेती है। अमित वीणा की पीठ पर स्नेहातिरेक से हाथ फेरता रहता है और उसकी आँखों से आँसू चू पड़ते हैं। मंच तिमिराच्छादित हो जाता है।]

[मंच पर पुनः प्रकाश होता है। एक दीवार पर भगवान बुद्ध का कलेण्डर टंगा हुआ है। सफेद खादी का पाजामा-कुर्ता पहने व आँखों पर ऐनक लगाये अमित पढ़ाने की मुद्रा मे खड़ा है। उसके हाथ में पोइन्टर है। अमित पॉइन्टर मेज पर रख देता है तथा रजिस्टर खोलकर प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र के छात्रों के नाम बोलने लगता है।]

अमित :

हनुमान वक्श, हमीद, रामदीन, रहमान, कर्त्तारसिंह, डेविड, भोला ।

(अदृश्य प्रौढ़ छात्रों को सम्बोधित करके) सब आ गये न ! (नेपथ्य में फुसफुसाहट व मन्द कोलाहल) तो अब सुनिए। मैं आपको अपने देश व समाज की कुछ ऐसी बातें बताऊँगा, जिनको जानना हम सब के लिए जरूरी है।१५ अगस्त, १९४७ को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ था, किन्तु स्वतन्त्रता का पूरा लाभ हम नहीं उठा पाये। आप जानते हैं इसका कारण क्या है ? तो सुनिए इसका मूल कारण यह है कि बीना आर्थिक व सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त किये राजनीतिक स्वतन्त्रता अधूरी रहती है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से हम अब भी बहुत पिछड़े हुए हैं। सब भारतीय समाज जाति, भाषा, प्रान्त एवं धर्मगत भेदभाव से बँटा हुआ है। साम्प्रदायिकता का जहर हमारे जीवन को विषाक्त बनाता है, लेकिन हमें सोचना चाहिए कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, अलग-अलग धर्म के होकर भी वतन के चमन में खिले हुए अलग-अलग रंगों के खुशबूदार फूल हैं जो इसकी शोभा बढ़ाते हैं। (नेपथ्य में कुछ मन्द-मन्द कोलाहल। अमित अदृश्य श्रोताओं की ओर उन्मुख होकर एकाभिनय की मुद्रा में) अच्छा तो आज यही तक। कल इसी समय फिर मिलेंगे।

[नेपथ्य में पुनः बातचीत की ध्वनि और कक्षा छूटने जैसा कोलाहल। अमित का प्रस्थान।]

[कुछ क्षण पश्चात सविता का प्रवेश। सविता के हाथ में दो एक पुस्तकें हैं जिन्हें वह मेज पर रख देती है। तदनन्तर महिला-मण्डल में एकत्रित अदृश्य नारी-समूह के समक्ष खड़ी हो उन्हें उद्बोधन देने की मुद्रा में खड़ी प्रतीत हो रही है।]

सविता :

(अदृश्य नारी-समूह की ओर उन्मुख होकर) माताओ और बहिनों। मैं आज आपके समक्ष समाज और देश की प्रगति और समृद्धि में महिलाओं के 'योगदान' विषय पर चर्चा करूँगी। बहिनों ! जिस-जिस देश का नारी-समाज प्रबुद्ध और जागरूक होता है, वह देश और समाज भी उन्नत और समृद्ध होता

है। लेकिन जिस देश की नारियाँ अज्ञान और अन्ध-विश्वासों के अन्धकार में भटकती है, वह देश और समाज कभी उन्नति नही कर सकता।

[सविता बोलती-बोलती रुक जाती है और एक अदृश्य महिला के प्रश्न का उत्तर देने का एकाभिनय करती है) नही धापू बाई, तुम्हारा यह सोचना ठीक नही है। पुरुष और स्त्री को समान अधिकार है। वह पुरुष की दासी नहीं, वरन् सहचरी है साथ-साथ चलने वाली सहयात्री है। हमारे समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दूर करना तथा भगवती दुर्गा बनकर अन्याय का प्रतिकार करना नारी जाति का पावन कर्तव्य है। यदि नारी अपनी अन्तर्निहित शक्ति को पहचान ले तो समाज मे एक क्रान्तिकारी मोड ला सकती है।

[नेपथ्य में नारी-कण्ठ से निसृत, अस्फुट ध्वनि, मन्द-मन्द कोलाहल। तदनन्तर एक नारा—सविता दीदी की जय! नारी-जागृति आन्दोलन जिन्दाबाद! धीरे-धीरे कोलाहल मन्द होकर शान्त हो जाता है। सविता अदृश्य महिला कार्यकर्ताओं से बातचीत की मुद्रा में।]

सविता :

हाँ, रमा! हाँ सरस्वती! अच्छा सुनीता तुम भी, अच्छा-अच्छा भगवती भी। आप सब मिलकर महिलाओ में काम करने के लिए अपना-अपना कार्य-क्षेत्र बाँट लें। याद रखिए—(कहती-कहती रुक जाती हैं। वीणा का प्रवेश। सविता वीणा की ओर देखकर अदृश्य महिला कार्यकर्ताओं से) लो, अब यह वीणा दीदी भी आ गई। आप इनको गाइडेंस लेकर अपना-अपना कार्यक्रम बना लें। हाँ, इस बात को सदैव स्मरण रखिए की हम आदिवासी, पददलित तथा पीडित वर्ग की महिलाओं को सुशिक्षित बनाकर, और उनमें जागृति लाकर इस समाज में एक क्रान्तिकारी मोड़ ला सकते है। अच्छा, अब आप जा सकती है। नमस्ते—नमस्ते।

[नेपथ्य में महिलाओं का मन्द स्वर, फिर शान्ति।]

सविता :

(वीणा से) अरी वीणा! तुम यहाँ कैसे?

वीणा :

(मुस्कराकर) क्यों सविता दीदी, तुम्हारे इस महिला-जागृति कार्यक्रम मे क्या मैं अपना योगदान नही दे सकती ?

सविता :

वाह ! यह कैसी बात कही तुमने । अरे ! इस कार्यक्रम का अब तुम्हे ही तो संचालन करना है । तभी मैंने तुम्हारे आते ही तुम्हे महिला कार्यकर्त्ताओ को गाइड करने का महत्वपूर्ण काम दिया है ।

वीणा :

बस सविता दीदी ! तुम्हारी यही बात तो मुझे अच्छी नही लगती । यह गाइडेंस का काम तो तुम्ही कर सकती हो । हाँ, मैं उनके साथ-साथ महिला कार्यक्रम मे काम करने के लिए अवश्य तत्पर हूँ ।

सविता :

(मुस्कराकर) चलो, यही सही । बात एक ही है । अच्छा, यह तो बताओ, अभी तुम कहाँ से आ रही हो ?

वीणा :

अभी तो सविता दीदी, मैं उद्योग-कला-केन्द्र से आ रही हूँ । अम्मा भी वही है ।

सविता .

अच्छा अम्मा जी वही है । उनको कैसा लगा हमारा उद्योग-केन्द्र ?

वीणा :

अम्मा बड़ी प्रसन्न हो रही थी । कह रही थी कि सिलाई-कढाई के कार्य की देख-रेख का कार्य तो मेरे जुम्मे छोड़ दो ।

सविता :

(प्रसन्नता से) अच्छा ! बहुत अच्छी बात है ।

वीणा :

लेकिन सविता दीदी, अब हमे उद्योग-कला-केन्द्र को एक बड़ा रूप देना पड़ेगा । अनेक युवक-युवतियाँ इस केन्द्र मे दिलचस्पी लेने लगे हैं । कार्य बहुत

बढ़ता जा रहा है। बिक्री के समुचित प्रबन्ध के लिए सेल्स मैनेजर, असिस्टेंट्स आदि की व्यवस्था करना भी बहुत जरूरी हो गया है।

सविता :

हाँ, मैं भी चाहती हूँ कि इसका प्रोडक्शन विभाग हो। सेल्स विभाग अलग हो, क्राफ्टमैन एवं अन्य, सिलाई-कढ़ाई, आर्ट्स एण्ड पेंटिंग्ज, गृह-साज-सज्जा की वस्तुओं वगैरह-वगैरह के अलग-अलग उत्पादन-केन्द्रों की व्यवस्था की जाय।

वीणा :

चलो सविता दीदी! हम उधर चलें। अमित भैया से भी इस सम्बन्ध में बात कर लें।

[दोनों का प्रस्थान। कुछ क्षण बाद अमित का प्रवेश। अमित मंच के ठीक बीच में आकर प्रेक्षकों की ओर मुंह करके खड़ा हो जाता है। तदनन्तर प्रेक्षकों को युवा मंच का सदस्य मानकर उद्बोधन की मुद्रा में दिखलायी पड़ता है। नेपथ्य में जन-रव उभरता है किन्तु अमित का बोलना प्रारम्भ होते ही जन-रव बन्द हो जाता है।]

अमित :

मित्रो! अपनी बात कहने से पूर्व मैं सर्वप्रथम इस देश की समस्त युवा-शक्ति को नमन करता हूँ। क्योंकि किसी भी देश और समाज में जब-जब भी इन्कलाब आया है, क्रान्ति हुई है, वह युवक और युवतियों के द्वारा हुई है। हमारे देश में ही लो। देश को आजादी दिलवाने के लिए कितने युवक-युवतियों ने, किशोर-किशोरियों ने आजादी की मशाल लेकर हंसते-हंसते अपने प्राणोत्सर्ग कर दिए। चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि इसी युवा-शक्ति के प्रज्वलित अग्निपिण्ड थे। किन्तु हमारे देश की दुर्दशा देखिए। क्या इसीलिए हमारे देश-भक्त वीरों ने आत्म-बलिदान किया था। (नेपथ्य में कोलाहल की ध्वनि होती है।) आज की युवा-शक्ति के समक्ष दूसरे प्रकार की चुनौतियां हैं। ये हैं—आम जनता को शोषण, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलवाना तथा अन्याय का मुस्तैदी से प्रतिकार करके शोषण-मुक्त नवीन समाज की रचना करना। इसके लिए हमें लोक-शक्ति को संगठित कर

वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था को बदलना होगा तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों से लोहा लेकर एवं देश की युवा-शक्ति को रचनात्मक प्रवृत्तियों में लगाकर देश में एक नवीन क्रान्ति लानी होगी। इसके लिए चाहे हमें कितना ही मूल्य चुकाना पड़े, आत्म-बलिदान करना पड़े.......।

[नेपथ्य में "अमित भैया अमर रहे", "युवा-शक्ति जिन्दाबाद के नारे" सुनाई पड़ते हैं।]

और दोस्तों! जब-जब अन्याय का प्रतिकार करने की आवश्यकता पड़ी है, हमारी युवा-शक्ति ही आगे आई है। हमारे पुराण और इतिहास इसके साक्षी हैं। महाभारत काल में वीर अभिमन्यु ने भी असत्य और अन्याय के पक्षधरों का चक्रव्यूह तोड़कर तथा आत्म-बलिदान करके सत्य और न्याय का पथ प्रशस्त किया था। आज देश के कोटि-कोटि अभिमन्युओं को देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, उत्पीडन एवं सामाजिक अन्ध-विश्वासों के चक्रव्यूह को बड़ी वीरतापूर्वक, कर्म-शक्ति से तोड़ना है। युवा-शक्ति जिन्दाबाद! जयहिन्द!

[नेपथ्य में अमित भैया की जय, युवा-शक्ति जिन्दाबाद के नारों की तुमुल ध्वनि सुनाई पड़ती है। मंच गहन अन्धकार में विलीन हो जाता है।]

[मंच पर पुन: प्रकाश होने पर अमित, सविता और वीणा परस्पर विचार-विनिमय में तल्लीन दिखलाई पड़ते हैं। वीणा के हाथ में दैनिक समाचार-पत्र है जिस पर वह कभी-कभी अपनी दृष्टि डाल लेती है।]

अमित :

(सविता से) उद्योग-कला-केन्द्र को विस्तृत रूप देने की योजना से मैं पूर्णत: सहमत हूँ, सविता! वस्तुत, हमारा यह प्रयोग बड़ा सफल रहा है।

सविता :

बेरोजगारी की समस्या को हल करने में इस योजना से कुछ तो मदद मिलेगी ही अमित! साथ ही युवा वर्ग में श्रम के प्रति निष्ठा भी जागृत होगी।

वीणा :

उनमें स्वावलम्बन की भावना जागृत होने के साथ-साथ आत्म-विश्वास भी उत्पन्न होगा।

अमित :

आज हमारे समाज की सबसे बड़ी दुर्बलता यह है वीणा कि उसमें श्रम के प्रति सम्मान की भावना बिल्कुल नहीं है। एक किसान का पुत्र कृषि में स्नातक होने के बाद भी अपने तकनीकी ज्ञान का उपयोग कृषि की उन्नति के लिए न कर केवल क्लर्क बनने के लिए भटकता फिरता है। भला, ऐसी स्थिति में यह समाज कैसे उन्नति कर सकता है?

वीणा :

किन्तु, हमारे समाज में असन्तुलन भी तो बहुत है भैया। समाज का एक वर्ग तो ऐसा है जो कमर तोड़कर मेहनत करने के लिए अभिशप्त है और दूसरा वर्ग ऐसा है जो श्रम से जी चुराकर केवल दूसरों के श्रम का उपभोग कर ऐय्याशी करता है।

अमित :

ऐसे परोपजीवी शोषक वर्ग के शोषण से मुक्त होने के लिए श्रमिक वर्ग को श्रमिक-संघों की स्थापना कर संगठित होना अति आवश्यक है। मेरे मस्तिष्क में एक योजना यह भी है कि ऐसे श्रमिक-संघों की स्थापना की जाय। उनके सदस्यों को नवीन तकनीकी ज्ञान की शिक्षा देने के लिए एवं श्रम के प्रति निष्ठा जाग्रत करने के लिए श्रम-शिविर संचालित किये जायें।

वीणा :

हाँ भैया! तुम्हारी यह योजना तो बहुत अच्छी है। शोषण से मुक्त होने की दिशा में यह एक नया अभियान होगा।

सविता :

लेकिन इस प्वाइंट पर मैं एक और दृष्टि से भी सोच रही हूँ।

[अमित और वीणा सविता को जिज्ञासा से देखते हैं।]

मेरा विचार है कि इस समस्या का मूल कारण हमारे व्यक्तित्व का विखण्डित होना है। एक संतुलित व्यक्तित्व निर्माण के लिए ज्ञान, कर्म और भावना का समन्वय होना अति आवश्यक है, किन्तु आज कर्म ज्ञान से अलग जा पड़ा है और भावना निष्क्रिय हो गई है।

वीणा :

तुम्हारा आशय क्या है सविता दीदी !

सविता :

मेरा आशय यह है वीणा कि सन्तुलित व्यक्तित्व के इस विघटन से एक वर्ग तो ऐसा बन गया जो केवल ज्ञान देने का ठेकेदार है, किन्तु कर्म के अभाव मे बिना हाथ-पैर का होकर पंगु हो गया है और दूसरा वर्ग ऐसा है जो ज्ञान के चक्षुओं के अभाव में अन्धा है। अब तुम्ही बताओ वीणा कि लूले-अन्धे अश्वों की यह जोड़ी समाज के रथ को कैसे खींच सकती है। बिना कर्म के ज्ञान पंगु होता है और बिना ज्ञान के कर्म अंधा। व्यक्ति की भावना कर्म को कमनीय और ज्ञान को रमणीय बनाती है। ज्ञान-गंगा में जब कर्म की कालिंदी मिलती है, तभी जीवन-सरिता मे सफलता के सुमन खिलते है।

वीणा :

(चहककर) वाह भाभी, तुम्हारा भी कोई जवाब नही।

अमित :

(चुटकी लेकर) अरे ! यह क्या बोल रही हो तुम ? बिना विवाह के ही भाभी ?

सविता :

(हँसकर) बडी नटखट हो वीणा तुम ? अभी तुम्हारा बचपन नहीं गया।

वीणा :

(इठलाकर) तो क्या हुआ ? एक दिन ऐसा भी तो आयेगा, तुम मेरी भाभी बनोगी, तब तुम्हें भाभी कहने का पहले से ही रिहर्सल क्यों न कर लिया जाय, सविता दीदी ?

[वीणा की इस बात पर तीनों का अट्टहास। सुभद्रा का प्रवेश।]

सुभद्रा :

अरे तुम यों बैठे-बैठे गप्पें ही लड़ाते रहोगे या खाना-वाना भी खाओगे।

अमित :

अरी माँ ! खाने की बड़ी चिन्ता की। वह कहाँ भागा जा रहा है ?

सुभद्रा :

तू तो हमेशा ऐसे ही कहता रहता है।

अमित :

(मुस्कराकर) तुम भी तो माँ हमेशा खाने की ही बात करती हो।

[सहसा पुलिस इन्सपैक्टर का प्रवेश। पुलिस इन्सपैक्टर को देखकर सब अवाक् खड़े रह जाते हैं।]

अमित :

(पुलिस इन्सपैक्टर से) कहिए, किसे तलाश रहे है आप ?

पुलिस इन्सपैक्टर :

क्या अमित आपका ही नाम है ?

अमित :

जी हाँ, कहिए।

पुलिस इन्सपैक्टर :

आपकी गिरफ्तारी का वारन्ट है।

अमित:

(हैरत में पड़कर) क्यों ? क्या किया है मैंने ?

सुभद्रा :

(धीरज खोकर) क्या किसी पर डाका डाला है या चोरी की है मेरे अमित ने ?

अमित :

(सुभद्रा से) तुम बीच में मत बोलो माँ ! (पुलिस इन्सपैक्टर से) हाँ, कहिए, किस जुर्म मे गिरफ्तार कर रहे है मुझे।

पुलिस इन्सपैक्टर :

आप पर नगर की शान्ति भंग करने का आरोप है।

अमित :

(आश्चर्य से) मुझ पर शान्ति भंग करने का आरोप ! यह झूठा आरोप किसने लगाया है मुझ पर ?

पुलिस इन्सपैक्टर :

इस सब का तो आपको पुलिस-स्टेशन पर चलने से ही पता चलेगा।

अमित :

(अधीर होकर) तब फिर चलिए।

[अमित पुलिस इन्सपैक्टर के साथ जाने को प्रस्तुत होता है, सुभद्रा सन्न रह जाती है। वीणा भी हतप्रभ। सविता कुछ सोच में डूब जाती है।]

अमित :

(पुलिस इन्सपैक्टर के साथ जाते-जाते) सविता। तुम माँ को समझाना कोई चिन्ता न करें। मैं वापस आ ही रहा हूँ।

[पुलिस इन्सपैक्टर के साथ अमित का प्रस्थान। मंच पर अँधेरा हो जाता है।]

[मंच पर पुनः प्रकाश होने पर न्यायालय का दृश्य। एक व्यक्ति जज की मुद्रा में न्यायाधीश की कुर्सी पर रौब से बैठा हुआ है। मेज पर एक लकड़ी का हथौड़ा व कुछ मोटी-मोटी पुस्तकें और फाइलें रखी हैं। बायीं ओर एक कटघरा है। जज के सामने सरकारी वकील खड़ा है और दरवाजे पर चपरासी खड़ा प्रतीत होता है। दर्शकों की गैलरी में सुभद्रा, सविता, वीणा बैठी दिखलाई पड़ती हैं।]

जज :

अभियुक्त को पेश किया जाय।

[पुलिस इन्सपैक्टर के साथ अमित का प्रवेश। उसे कटघरे में खड़ा किया जाता है।]

जज :

(सरकारी वकील से) अभियोग बयान किया जाय।

सरकारी वकील :

मी लॉर्ड ! अभियुक्त अमित उर्फ अभिमन्यु पर बड़े गम्भीर आरोप हैं। अभियुक्त हमारे देश के युवा वर्ग को करप्ट कर रहा है। उन्हें गुमराह करके तोड़-फोड तथा आगजनी कराने का आरोप इस पर जिला मजिस्ट्रेट की अदालत मे साबित हो चुका है। मी लॉर्ड ! अभियुक्त बडा खतरनाक है। इसने मोदी फैक्टरी के मजदूरो को भड़काकर फैक्टरी मे आग लगाने की कोशिश की है। उनसे हड़तालें कराई है। मी लार्ड ! पुराना रिकार्ड भी इस बात का सबूत है कि ··

[जज को कुछ नोट करते देखकर रुक जाता है।]

जज :

गो ऑन !

सरकारी वकील :

मी लार्ड ! पुलिस के रेकॉर्ड्स से पता चलता है कि अभियुक्त ने जब वह कॉलेज मे स्टूडेण्ट यूनियन का प्रेसीडेण्ट था, तब भी छात्रो को भड़का कर हड़तालें व तोड़-फोड़ करवायी थी तथा साम्प्रदायिक दंगो मे भी इसका हाथ था। मी लार्ड ! इसके बाद अभियुक्त ने 'जन-क्रान्ति' अखबार निकालकर नगर के संभ्रान्त लोगों के मुतल्लिक झूठी खबरें छाप कर उनके चरित्र-हनन की कोशिश की, उनकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाई। अब अभियुक्त पर युवको, छात्रो, मजदूरों और किसानों को भड़काकर आगजनी, लूटमार कराने तथा हिंसा भड़काने के गम्भीर आरोप है। (जज कुछ नोट करता है। फिर सरकारी वकील से)

जज :

कुछ और कहना है ?

सरकारी वकील :

मी लॉर्ड ! अभियुक्त पर इन आरोपो के अलावा एक और भी गम्भीर आरोप है। वह यह कि अभियुक्त समाज के प्रचलित नियमो की अवहेलना करके बिना ब्याह किये एक युवती के साथ रह रहा है। अभियुक्त का उस युवति के साथ अनैतिक ·······।

[सरकारी वकील के उक्त वाक्य को सुनकर अमित अधीर हो उठता है और तिलमिलाकर बोल पड़ता है ।]

अमित :

न्यायमूर्ति ! यह सब बकवास है । एकदम झूठ है ।

जज :

(हथोड़े को मेज पर मारकर) ऑर्डर ! ऑर्डर ! मिस्टर अमित इस तरह बीच में मत बोलिए ।

सरकारी वकील :

मी लॉर्ड ! इन गम्भीर आरोपों को मद्दे नजर रखते हुए मेरी कोर्ट से गुजारिश है कि अभियुक्त को कठोर से कठोर सजा दे । बस, मी लॉर्ड ! सरकारी पक्ष की ओर से मुझे इतना ही कहना है ।

जज :

(अमित से) नाऊ अभियुक्त अमित उर्फ अभिमन्यु ! तुम्हे इन आरोपो के विरुद्ध कुछ सफाई देनी है ?

अमित :

न्यायमूर्ति बस मेरा यही निवेदन है कि ये सब आरोप मिथ्या और मनगढ़न्त हैं । इन तथाकथित समाज के ठेकेदारों, काला-बाजारियों और भ्रष्टाचारियों ने पुलिस से मिलकर मेरे विरुद्ध साजिश की है । अपने काले कारनामो पर से पर्दा उठा जानकर, गरीबो के शोषक और उत्पीड़क इन लोगो ने बौखला कर मेरे विरुद्ध यह षड्यन्त्र रचा है ताकि मेरे विरुद्ध चक्रव्यूह रच कर बिना अवरोध के वे गरीब जनता का शोषण जारी रखे रहे । न्यायमूर्ति ! यदि इसे अपराध माना जाय तो मेरा अपराध इतना ही है कि समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए मैंने लोक-शक्ति को जाग्रत करने का कार्य किया, अन्याय और असत्य का प्रतिकार करने के लिए युवा वर्ग को संगठित किया और उन्हे देश की रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर प्रवृत्त किया । एक दूसरा आरोप समाज मे अनैतिकता फैलाने का लगाया गया है, उस पर मुझे बड़ा दु:ख होता है। न्यायमूर्ति ! समाज की प्रगतिशीलता का इतना दम भरने पर भी नारी जाति के प्रति जो

अब तक हम क्षुद्र विचार रखते आये हैं, उनमें तनिक भी परिवर्तन नहीं आया है। पुरुष और नारी का रिश्ता माँ, बहिन, पत्नी या रखैल तक ही सीमित नहीं है, मी लॉर्ड ! समान विचार और उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह महयात्री भी हो सकते हैं। उनमें पवित्र मैत्री का रिश्ता भी हो सकता है। सविता के साथ मेरा ऐसा ही पवित्र सम्बन्ध है।

जज :

(अधीर होकर) मि. अमित ! भाषण मत दीजिए, अपनी सफाई में कुछ कहना हो तो कहिए।

अमित :

(जज की पूर्वाग्रह से पूर्ण दृष्टि को भाँपकर) बस जज साहब ! मुझे अपनी सफाई में जो कहना है, बस इतना ही है।

[कोर्ट में चुप्पी छा जाती है। अमित अभियुक्त के कटघरे में चुप खड़ा रहता है। सुभद्रा, सविता एवं वीणा एक दूसरे को बड़ी आतुर दृष्टि से देखती हुई प्रतीत होती हैं।]

जज :

(कोर्ट की चुप्पी को भंग करते हुए, गम्भीर मुद्रा में) अभियुक्त अमित उर्फ अभिमन्यु, तुम्हारे बयानों से यह साबित नहीं होता कि तुम पर जो आरोप लगाये गये हैं, वे गलत हैं।

[कोर्ट में बैठी सुभद्रा, सविता, वीणा जज की इस बात से चौंक पड़ती है तथा सरकारी वकील के मुख पर हल्की-सी मुस्कान खिल उठती है।]

जज :

अतः तुम्हें ? इण्डियन पीनल कोड की दफा 144 के तहत छः महीने की सख्त सजा तथा पाँच सौ रुपया जुर्माना किया जाता है।

[कोर्ट में स्तब्धता छा जाती है। जज के इस फैसले को सुनकर सुभद्रा संज्ञा शून्य हो जाती है। वीणा बिलख-बिलख कर रोने लगती है। किन्तु सविता धैर्यपूर्वक कटघरे में खड़े अमित के पास पहुंच

जाती है और उसे निर्निमेष इस प्रकार देखती रहती है मानो आंखो ही आंखों से उसे हंसते-हंसते कठिनाइयों पर विजय पाने का पाठ पढ़ा रही हो। कुछ क्षण बाद प्रेम की पावन विह्वलता से अमित और सविता दोनों की आंखों के कोर गीले हो जाते हैं। धीरे-धीरे मंच गहन तिमिर में डूब जाता है। नेपथ्य मे अवसादपूर्ण वाद्य-यन्त्र की ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है।]

[मंच पर पुनः प्रकाश की रेखाएं शनैः-शनैः उभरने लगती है। नेपथ्य में कोलाहल की ध्वनि सुनाई पड़ती है। तत्पश्चात् कुछ नारे अनुगुंजित होने लगते हैं— लोकनायक अमित भैया जिन्दाबाद! अन्याय और अत्याचार का नाश हो! युवा-एकता जिन्दाबाद!]

फूल मालाएं पहिने अमित मंच पर प्रवेश करता है। प्रसन्न मुद्रा में सविता और वीणा तथा दो युवक उसके साथ हैं।]

पहला युवक :
(ऊंचे स्वर से नारा लगाता है) लोकनायक अमित भैया ……

दूसरा युवक :
अमर रहें, अमर रहे !

सविता :
नही झुकेंगे, नही झुकेंगे !

वीणा :
बाधाओ से नही रुकेंगे !

पहला युवक :
महँगाई और भ्रष्टाचार—

दूसरा युवक :
खत्म करो, खत्म करो।

पहला युवक :
भारत माता की जय।

दूसरा युवक :
लोकनायक अमित भैया की जय !

पहला युवक :

लोक-क्रान्ति जिन्दाबाद !

दूसरा युवक :

युवा-शक्ति जिन्दाबाद !

[दोनों युवक नारे लगाते मंच से दूसरी ओर चले जाते हैं। कुछ क्षण पश्चात सुभद्रा का प्रवेश। अमित झुककर सुभद्रा के चरण स्पर्श करता है। सुभद्रा आशीर्वाद देती है। तदनन्तर सस्नेह अमित का सिर अपने वक्ष से सटाकर सिर पर हाथ फेरती है और उसकी आँखों में प्रसन्नता के आँसू चू पड़ते हैं।]

सुभद्रा :

(भाव विह्वलता के साथ) बेटा अमित ! बड़ा दुबला हो गया, बेटा ! जालिमों ने जेल में बड़ा दुख दिया होगा, बेटा !

अमित :

नहीं माँ ! बस यह समझो कि समय (चुटकी बजाकर) यों ही कट गया !

वीणा :

(सुभद्रा से) माँ, ज्यों ही लोगों को भैया के जेल से छूटने का पता चला, भैया के स्वागत के लिए हजारों लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी। 'अमित भैया अमर रहें' के नारों से आकाश गूँज उठा। युवकों ने अमित भैया को अपने कन्धों पर बैठा लिया और आनन्द से उछलने लगे। युवतियों ने उन्हें मालाओं से लाद दिया।

सविता :

हाँ माँ ! लोगों का ऐसा उत्साह मैंने कम देखा। उन्होंने अमित दादा को शोषण, अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष को तीव्र करने के लिए लोक-संघर्ष समिति का अध्यक्ष भी चुना है।

सुभद्रा :

(गद्‌गद् होकर) तुमने अपनी माँ की कोख की लाज रख ली बेटा ! (कहती-कहती रुककर कुछ याद करती-सी) बेटा अमित, तुम मेरे ऐसे अभिमन्यु हो जिसे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण और अन्याय के चक्रव्यूह को तोड़ने में अवश्य सफलता मिलेगी।

[पहला युवक और दूसरा युवक का मंच पर प्रवेश। दोनों सुभद्रा के चरण स्पर्श करते हैं।]

पहला युवक :

मां, तुम्हारे एक नहीं हम अनेक अभिमन्यु बेटे हैं।

दूसरा युवक :

जो देश और समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों, अन्ध-विश्वासों, साम्प्रदायिकता, शोषण, भ्रष्टाचार का चक्रव्यूह तोड़ने के लिए प्राण-प्रण से कटिबद्ध हैं।

पहला युवक :

जो रचनात्मक प्रवृत्तियों में लगकर देश का रूप संवारने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ है।

दोनों युवक :

हमें आशीर्वाद दो मां! हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करें।

[सुभद्रा भाव-विह्वल होकर उन दोनों के सिरों पर अपने हाथ रखती हुई उन्हें आशीर्वाद देती है। नेपथ्य में छड़ी टेककर चलने की ध्वनि सुनाई पड़ती है। मंच पर पं० रामनाथ का हाथ में छड़ी लिये हुए धीमी चाल से प्रवेश। लगता है उनकी आंखों की ज्योति धूमिल हो चली है।]

पं० रामनाथ :

(वृद्धावस्था-जनित शिथिल स्वर में) सुभद्रा बहू!

वीणा :

(प्रसन्नतापूर्वक उछलकर) लो भैया, दादाजी भी आ गये।

पं० रामनाथ :

अरे, तुम लोग कहां हो? क्या अमित जेल से छूट आया, बहू?

[अमित दादा जी के पास तीव्र गति से चलकर उनके चरण स्पर्श करता है।]

अमित :

मैं—मैं आ गया हूं दादाजी! अब आपकी तबियत कैसी है?

पं. रामनाथ :

(अमित को गले लगाकर सिर पर हाथ फेरते हुए) मुझे माफ कर दो बेटा ! मुझे मालूम नहीं था कि एक दिन तुम लोक-देवता बनकर हमारे कुल का नाम उजागर करोगे ।

अमित :

(भाव-विह्वल होकर) यह आप क्या कह रहे है दादाजी ? यह सब आपके ही आशीर्वाद का तो फल है ।

पं. रामनाथ :

अरे, बेटी सविता कहाँ है अमित ?

सविता :

(आगे बढ़कर पं. रामनाथ के चरण-स्पर्श करती हुई) मैं सविता प्रमाण करती हू दादाजी ! (पं. रामनाथ सविता को आशीर्वाद देते हैं ।)

पं. रामनाथ :

तुम गायत्री के समान उज्जवल और पवित्र हो बेटी ! मैंने तुम्हें समझने में बड़ी भूल की ।

सविता :

(विह्वल होकर) ऐसा न कहे दादाजी ! मै—मैं तो कुछ भी नही हूं दादाजी । मैं क्या हूँ ?

पं. रामनाथ :

(कुछ अभिनय करता-सा) अमित, अब अपने इस बूढे दादा की एक बात तो मान ले बेटा ! न जाने कब प्राण उखड जाय ?

अमित :

(उत्सुकता और अधीरता के मिश्रित भाव के साथ) कहिए दादाजी ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है ।

पं. रामनाथ :

अब तू अपना विवाह कर ले बेटा । तेरी माँ सुभद्रा को कुछ तो सहारा मिलेगा ।

[अमित पं. रामनाथ की उसी पुरानी बात को याद कर आशंका से विचलित हो उठता है और पं. रामनाथ की बात का कुछ भी उत्तर नहीं देता ।]

क्यों ? चुप क्यों है बेटा ! मैंने तेरे लिए एक लड़की भी ढूंढ ली है।

[अमित पुनः निरुत्तर]

(पं. रामनाथ अमित के मनोभावों को समझ कुछ मुस्कराते हुए) क्यों ? तू चप क्यों है बेटा जन्म भर कुआंरा ही रहेगा ?

अमित :

(उद्विग्न होकर) मैं मैं " मैंने अभी भी कोई निश्चय नहीं किया है दादा जी। इस बात के लिए आप व्यर्थ में चिन्तित न हों।

प. रामनाथ :

(मुस्कराकर) क्यों बेटा ? क्या तुझे सविता पसन्द नहीं है ? उसके लिए तो तू अपने दादा से भी झगड़ बैठा था।

[पं रामनाथ की बात सुन सविता और अमित दोनों उल्लसित हो उठते हैं और कनखियों से एक दूसरे को देखकर मुस्करा उठते हैं। वीणा चहक कर उछल पड़ती है।]

वीणा :

(वही पुराने अल्हड़पन से) वाह दादाजी, बुढ़ापे में भी आप बिल्लो-चूहे का खेल खेलते हैं। (शरारत से अमित और सविता को देखती हुई) बात किस तरह घुमाकर कही है; भैया-भाभी के तो प्राण ही सूख चले थे।

[वीणा की बात सुनकर पं. रामनाथ ठहाका मारकर हंस पड़ता है। सब उनकी हंसी में साथ देते हैं। मंच पर अन्धकार छा जाता है।]

[मंच पर पुन. प्रकाश होने पर सविता और वीणा बातें करती दिखलाई पड़ती हैं। सविता की मांग सिन्दूर से भरी हुई है। मुंह पर उल्लास की रेखाएँ उभरती जान पड़ती हैं। चलते-चलते सविता हल्के से कराह कर जमीन पर बैठ जाती है।]

वीणा :

(सविता को इस प्रकार जमीन पर बैठते देख कुछ आशंका से) क्यों क्या हुआ भाभी ? तबियत तो ठीक है न ?

सविता :

कुछ नहीं वीणा। यह तो कुछ यों ही। (फिर सलज्ज भाव से) इन दिनों कुछ ! (लाज के कारण कहती-कहती रुक जाती है।)

वीणा :

यों ही क्या भाभी ? कुछ बताओ भी न !

सविता :

(मुस्कराती हुई) चल हट ! अब तू क्या समझेगी ?

वीणा :

(प्रसन्नता से उछलकर) वाह भाभी ! मैं क्यों नहीं समझूंगी ? क्या मुझे निरी बुद्धू समझ रखा है तुमने ?

सविता :

तो चल बता ।

वीणा :

(इसी तरह उल्लास भाव से) एक और अभिमन्यु का जन्म !

(सविता सलज्ज भाव से चुप रहती है) क्यों है न यही बात ?

[सविता मुस्कराकर चुप रहती है । वीणा प्रसन्नता से चहक-चहक 'एक और अभिमन्यु'—'एक और अभिमन्यु' बोलती रहती है । मंच पर अमित का प्रवेश ।]

अमित :

(वीणा को इस प्रकार चहकते देखकर विस्मय मुद्रा में) अरे, आज तुझे क्या मिल गया वीणा ! इस प्रकार चहक क्यों रही है ?

वीणा :

पहले मिठाई खिलाओ ।

अमित :

(सविता से) क्यों क्या बात है सविता ? वीणा यों चहक क्यों रही है ? (सविता सलज्ज भाव से केवल मुस्करा देती है ।)

वीणा :

अरी ! भाभी क्या बतायेगी, भैया ? तुम पहले मिठाई तो खिलाओ . अच्छा क्या खिलाओगे ? अम्मा के पास जाती हूँ यह खुशखबरी सुनाने ।

[वीणा का प्रस्थान । मंच पर सविता और अमित रह जाते हैं ।]

अमित :

क्यों सविता ! वीणा आज इतनी प्रसन्न क्यों है ?

सविता :

(कुछ व्यंग भाव से) तुम तो निरे बुद्धू हो। इतना भी नहीं समझते ! अरे हमारे यहाँ एक और अभिमन्यु का जन्म हो रहा है।

अमित :

(प्रसन्नता से उछलकर) सच सविता !

सविता :

नही तो क्या झूठ कह रही हूँ। किन्तु अमित हमारा यह नया अभिमन्यु तुम निश्चय मानो, समाज मे व्याप्त अन्याय, शोषण और उत्पीडन के चक्रव्यूह को भेदकर ही रहेगा। युवा पीढ़ी का यह नया सूरज समाज की जड़ता, अन्ध-विश्वास और अन्याय के तिमिर को नष्ट करके रहेगा।

अमित :

और सविता ! जब तक यह धरती अन्याय, शोषण और उत्पीड़न से मुक्त नही होगी, तब तक असत्य और अन्याय के इस चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए बार-बार हर युग में अभिमन्युओं का जन्म होता रहेगा।

[दोनों एक साथ भावपूर्ण मुद्रा में गुनगुनाते हुए मंच से प्रस्थान करते हैं।]

[नेपथ्य में उच्च स्वर सुनाई पड़ते है।]

अमिट विश्वास है यह,
प्राण की आश है यह,
जिन्दगी कभी न हारेगी
चेतना यही पुकारेगी,
ध्वंस के साधकों सुन लो,
प्रगति के बाधको सुन लो,
किरन यह सृजन सूरज की
तिमिर से कभी न हारेगी।

[मंच शनैः शनैः, अन्धकार में विलीन हो जाता है।

